॥ओ३म्॥

आर्यकुमार गौरव गीताञ्जलि

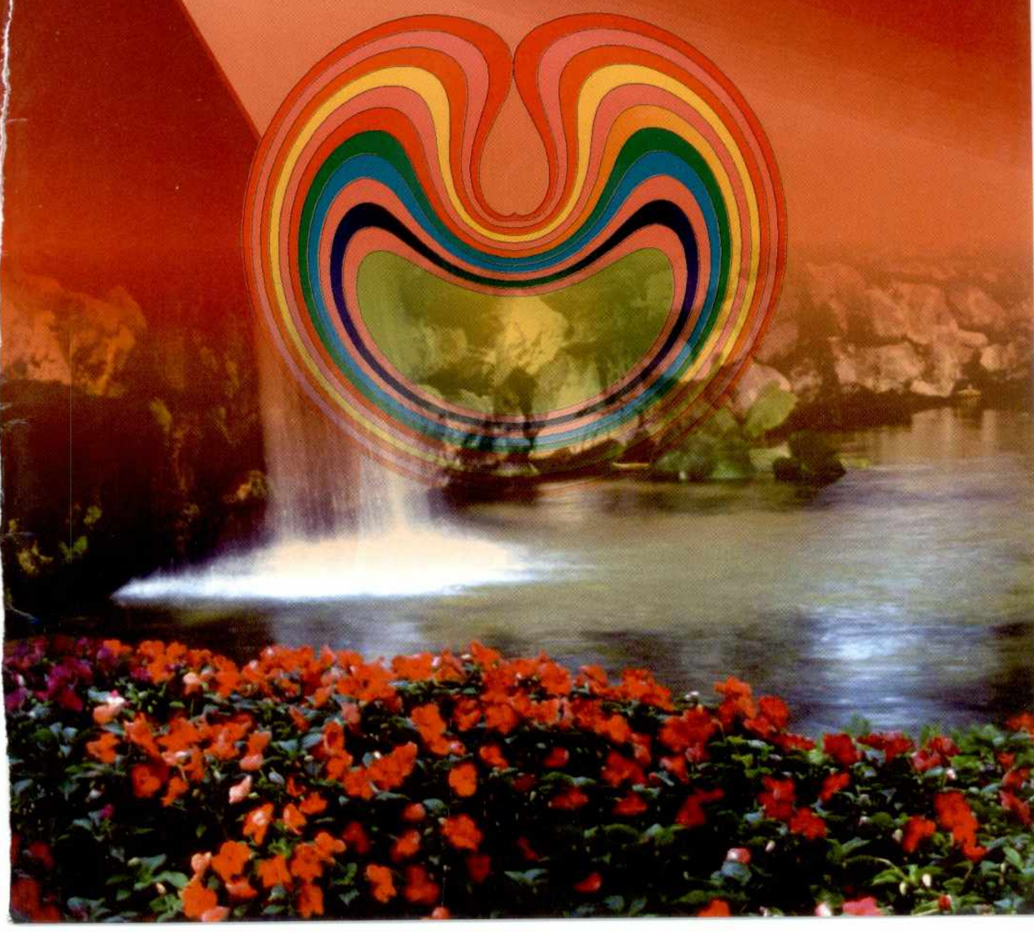

॥ ओ३म् ॥

आर्यकुमार गौरव गीताञ्जलि

समाहर्ता :

आचार्य ब्र० नन्दकिशोर

सम्पादक :

पं० प्रियदत्त शास्त्री
हैदराबाद

प्रकाशक :

वैदिक साहित्य-प्रतिष्ठान
२७०४, गली पत्ते वाली, श्रद्धानन्द बाजार,
नया बाजार, दिल्ली-११०००६

प्रकाशक :

वैदिक साहित्य-प्रतिष्ठान
२७०४, गली पत्ते वाली, श्रद्धानन्द बाजार,
नया बाजार, दिल्ली-११०००६ (मो०) ०९८६८४३२७०१

सहयोग :

आर्य अशोक कुमार वर्मा
मण्डालाधिपति आर्य वीर दल पानीपत (हरियाणा)

संस्करण : प्रथम, अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन
२५-२८ अक्तूबर, २०१२

पुस्तक प्राप्ति-स्थान :

१. **आर्ष गुरुकुल नर्मदापुरम्**
जि० होशंगाबाद, (मध्यप्रदेश)

२. **आर्य अशोक कुमार वर्मा**
म०नं० १०३-१०४, वार्ड नं० ८, नजदीक कलन्दर चौक
पानीपत (हरियाणा)

३. **श्री गणेशदास गरिमा गोयल**
२७०४, गली पत्ते वाली, श्रद्धानन्द बाजार,
नया बाजार, दिल्ली-११०००६ (मोबाइल) ०९२१२४५८८४१

४. **श्री वैद्य हंसराज जी,** कल्पतरु आश्रम, नेपाली फार्म,
पो० सत्यनारायण मन्दिर, हरिद्वार रोड, जि० देहरादून (उत्तराखण्ड)

५. **आर्यसमाज महावीर नगर भोपाल**

६. **आर्ष गुरुकुल देवतीर्थ (देवढ़ियाँ)**
पो० परसागढ़ बाजार, थाना एकमा, जि० छपरा (बिहार)

मूल्य : २५.०० रुपये

शब्द-संयोजक : **वैदिक प्रेस**, कैलाशनगर, दिल्ली-३१

मुद्रक : **राधा प्रेस**, गांधीनगर, दिल्ली-३१

उद्बोधन के दो शब्द

भारतवर्ष में जहां-जहां आर्यसमाज हैं, वहां-वहां बालक-बालिकाओं के लिये आर्य कुमार की शाखाएँ लगायी जाती थीं। अब उसको नया रूप आर्य वीर दल के नाम से जाना जाता है। गर्मियों में अवकाश के समय आर्य वीर दल की शाखाएँ शिविर भारत के सभी प्रान्तों में लगायी जाती हैं । विशेष रूप से बालकों को नैतिक शिक्षा, योग, व्यायाम, प्राणायाम, उद्बोधन के गीत बालकों में प्राण फूंकने के लिये गाये जाते हैं । देश की आजादी पर इन गीतों को गा सकते हैं ।

पं० कुंवर सुखलाल आर्य मुसाफिर, पं० प्रकाश वीरेन्द्र 'वीर', स्व० अमर स्वामी जी, स्व० नन्दलाल जी, बेमोल जी पथिक जी के गीतों का चयन किया गया है । आजकल नूतन पीढ़ी इन गीतों को गा-गाकर अत्यन्त आनन्द एवं लाभ उठा सकेंगे ।

आशा है आर्य नवयुवक आर्य कुमार गौरव गीताञ्जलि को अपने हृदय में स्थान देकर अधिक से अधिक इन गीतों को महत्त्व देंगे ।

-आचार्य ब्र० नन्दकिशोर
प्रचारमन्त्री सार्वदेशिक आर्य वीर दल
कल्पतरु आश्रम नेपाली फार्म
पो० सत्यनारायण मन्दिर
जि० देहरादून (उत्तराखण्ड) भारत

विषय सूची

विषय	पृष्ठ
अमृत वेले जाग	६
दण्डा ऊंचा रहे हमारा	६
जाग-जाग नौजवान	७
अपने व्रत को निभाना	८
आर्य राष्ट्र निर्माण करेंगे	८
बनो आर्य खुद	९
खिदमते खलक में जो	९
वो मुर्दा है जो स्वाभिमानी नहीं	१०
मेरा क्या करेंगे	११
ये किसका फसाना है	११
सारी दुनिया में दिन	१२
उठो आर्य वीरो	१२
दयानन्द क्या कर गया	१३
व्रत धारो देश जगाना है	१४
हम आर्य वीराङ्गनाएँ	१४
आदत बुरी सुधार	१५
आर्यों का वीरदल,	१५
बढ़ता चल बढ़ता चल	१६
वेद के प्रचार में	१७
चित्रकार चित्र ऐसे	१८
वेदों का सद् उपदेश	१९
ओ३म् ध्वजा लहराओ	२०
वेद विद्या का विस्तार	२१
आओ आर्य वीरो	२१
ऐ वतन के नौजवां	२२
वेदों का आदेश	२२
जीने से तेरे	२४

विषय	पृष्ठ
उठ, आर्य वीर	२४
मरण एक हो	२५
जगा दो भारत को भगवान्	२६
स्वदेश का मान भरा	२७
न मृत्यु से डरो कभी	२७
जिन्दगी है शान की	२८
कदम कदम बढ़ाए जा	२८
न निराश करो मन को	२९
हमारी वह गौरव कहानी	३०
बच्चों को तालीम	३०
भारत के नर नार	३१
वतन है सेवक	३१
करना है निर्माण	३२
जवानी तुम्हारी	३३
चलना संभल के	३३
उठो वतन के नौजवानो	३४
आर्यों को लगन लगा दे	३४
हम कौन थे क्या हो गये	३५
एक डाल के हम पक्षी	३६
फांसी के तख्ते पर	३७
कहां गई तरुणाई	३८
इन्साफ की डगर पे	३९
न हाथ एक शस्त्र हो	३९
पुकारती है ये जमीं	४०
सीमा के प्रहरी जवान	४०
जागो रे भाई	४१
नौजवान देश के	४२

विषय	पृष्ठ
अलग अलग है भाषा	४२
मिल के चलो	४३
हम जवां हैं देश के	४३
एक तन पर सोने के	४४
उठो नौजवानो	४४
न मानापमान का अपने	४५
आशाओं की जोत जगा	४६
तुम्हें दिखायें झांकी	४७
चन्दन है इस देश की माटी	४८
सुबह हुई, रात गई दूर	४८
देश हमारा धरती अपनी	४९
देश की माटी	४९
मत बांटो इन्सान को	५०
सारे जहां से अच्छा	५०
जीने की बात कर	५१
हिन्दुस्तानी हम	५२
ऋतुओं में वसन्त	५२
हिन्द देश के निवासी	५३
भारत देश महान्	५३
यह है देश वीर जवानों का	५४
प्रतिज्ञा कर लें अपने धर्म-ईमान की	५४
आखरी सन्देश है	५५
हिन्दुस्तानी हिन्दी न जाने	५६
विजयी विश्व तिरंगा	५६
वैदिक धर्म हमारा	५७
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्	५७
लाखों जगाने वाले आये	५८
जयति ओम् ध्वज	५९
ध्वजेयं मुदा वर्द्धते	६०
वैदिक नाद बजाओ	६०
कब होश में आओगे ?	६१
उठो दयानन्द के सिपाहियो	६१
खींच लो कृपाण	६२
दुष्ट जनों से डरना क्या	६३
उठो सोने वालो	६४
संगठन हम करें	६४

सुप्रभात गीत

अमृत वेले जाग अमृत बरस रहा ।
छोड़ नींद का राग अमृत बरस रहा ।।

ब्रह्म मुहूर्त के पीछे सोना ।
है अपने जीवन को खोना ।
झट खटिया को त्याग अमृत बरस रहा ।।१।।

नीरस जीवन में रस भर ले ।
धार धर्म भवसागर तर ले ।
त्यज मिथ्या अनुराग अमृत बरस रहा ।।२।।

वेद-ज्ञान की ओढ़ चदरिया ।
छोड़ कपट चल प्रेम डगरिया ।
धो कुसंग के दाग अमृत बरस रहा ।।३।।

परोपकार का लक्ष्य बना ले ।
ऊंचा अपना आप उठा ले ।
शुभ कर्मों में लाग अमृत बरस रहा ।।४।।

बड़े भाग्य से नर तन पाया ।
ऋषि मुनियों ने यही बताया ।
राख इसे बेदाग अमृत बरस रहा ।।५।।

दण्डा ऊंचा

विश्वविजयी मनु का प्यारा दण्डा ऊंचा रहे हमारा ।
नवयुवकों का यह हो नारा, दण्डा ऊंचा रहे हमारा ।।

इसकी शान न जाने पाये, चाहे जान भले ही जाये ।
इसके अर्पण तन-मन सारा, दण्डा ऊंचा रहे हमारा ।।१।।

दण्डे से शासित हो प्रजा, है दण्डे का ऊंचा दरजा ।
दण्डे ने हर दुष्ट सुधारा, दण्डा ऊंचा रहे हमारा ।।२।।

श्री राम ने दण्ड उठाया, लंका से सीता को लाया ।
और रावण का गर्व निवारा, दण्डा ऊंचा रहे हमारा ।।३।।

श्री कृष्ण ने दण्डा लेकर, वो अर्जुन को हाथ में देकर ।
कौरव दल को था संहारा, दण्डा ऊंचा रहे हमारा ।।४।।

राणा सांगा शिवा नलवा, दुष्ट हने जो करते बलवा ।
दण्डा ले बन्दा ललकारा, दण्डा ऊंचा रहे हमारा ।।५।।

हाथी शेर देखे सरकस में, दण्डे ने कर राखे वश में ।
काम करें दण्डे से सारा, दण्डा ऊंचा रहे हमारा ।।६।।

दण्डे पर झण्डा रहता है, झण्डा देख जगत् कहता है ।
है झण्डे का दण्ड सहारा, दण्डा ऊंचा रहे हमारा ।।७।।

भीष्म करो दण्डे की पूजा, दण्डे जैसा देव न दूजा ।
बिना दण्ड नहीं होवे गुजारा, दण्डा ऊंचा रहे हमारा ।।८।।

जाग नौजवान

है पुकारता स्वदेश जाग-जाग नौजवान ।
हो गया प्रभातकाल नींद त्याग नौजवान ।। टेक ।।

बन शिवा, प्रताप, राम, कृष्ण, भीम के समान ।
याद करके पूर्वजों की वीरता व स्वाभिमान ।।
शत्रुओं के रक्त से तू खेल फाग नौजवान ।।१।।

धांय धांय कर समाज और देश जल रहा ।
देख पीड़ितों की आह का धूआं निकल रहा ।।
लग रही है देशभर में एक आग नौजवान ।।२।।

है हमारे पूर्वजों की जो पुनीत यादगार ।
जिस पे प्राण दे गये हैं देशभक्त बेशुमार ।।
हो न जाये नष्ट देश का वो बाग नौजवान ।।३।।

उठ स्वराष्ट्र में नवीन जोश की लहर चला ।
बन महान् आर्य वीर ज्योति क्रान्ति की जला ।।
रूढ़ियों कुरीतियों से दूर भाग नौजवान ।।४।।

आर्य वीरो व्रत को निभाना

आर्य वीरो अपने व्रत को निभाते जाना ।
ऋषि दयानन्द जी के ऋण को चुकाते जाना ।।

ऐसा प्रचार कर दो, जग को बेदार कर दो ।
निद्रा में सोये जो-जो, उनको जगाते जाना ।।१।।

ऊंचा आचार रखना, शुद्ध व्यवहार रखना ।
वेदों का अमृत पान, जग को पिलाते जाना ।।२।।

श्रद्धानन्द के हो प्यारे, दयानन्द जी के दुलारे ।
देश धर्म के प्यारो, गीत ही गाते जाना ।।३।।

जाति की सेवा करना, वीरों की मौत मरना ।
वर्षा हो गोलियों की, सीने पे खाते जाना ।।४।।

आर्य राष्ट्र

आर्य राष्ट्र निर्माण करेंगे, हम अपने बलिदानों से ।
गूंज उठे अवनि अम्बर, फिर सामवेद के गानों से ।।

दबी पड़ी है अपनी संस्कृति, भारत के प्राचीरों में ।
छिपा हुआ आर्यत्व सो रहा, भारतीय वर वीरों में ।।
कला और विज्ञान हमारे, ढके हुए हैं टीलों में ।
सुप्त पड़ी है सैन्य शक्तियाँ, राजपूत और भीलों में ।।
नव जीवन हम देंगे उनको, अपने प्रबल विधानों से ।
आर्य राष्ट्र……

इस छाती पर झेला हम ने, है यूनानी तीरों को ।
किया पराजित कई बार, हम ने ईरानी वीरों को ।।
बार-बार कुण्ठित कर डाला, हूणों की शमशीरों को ।
मुँह की खानी पड़ी सदा ही, शक जैसे रणधीरों को ।।
विजय श्री के साथ-साथ ली, कन्याएँ अफगानों से ।
आर्य राष्ट्र……

वीर व्रती हो जो प्रण धरा, उसको पूर्ण करेंगे हम ।
करे कोई अविरुद्ध मार्ग पर, किञ्चित् नहीं हटेंगे ।।
देश विदेशों में भारत का, उन्नत भाव करेंगे ।
दु:ख सारी विपदा माँ की, देकर शीश हरेंगे हम ।।
आर्य राष्ट्र......

विश्व को आर्य बनाओ

बनो आर्य खुद और जहां को बना दो ।
जो कहते हो दुनिया को करके दिखा दो ।।

प्रभु एक है वेद है उसकी वाणी ।
ये पैगाम स्वामी का घर-घर सुना दो ।।

न ऋषियों की तहजीब मिट जाये वीरो ।
मिटाये जो इसको उन्हें तुम मिटा दो ।।

हँसाओ न दुनिया को लड़-लड़ के बाहम ।
समाजों में उल्फत की गंगा बहा दो ।।

जहालत की दीवारें अब तक खड़ी हैं ।
उठो और उनको तुम जड़ से हिला दो ।।

भटकते बहुत नौजवाँ अब फिर रहे हैं ।
'मुसाफिर' तुम उन्हें जामे वहदत पिला दो ।।

मुसाफिर हैं अपने घर जायेंगे

खिदमते खलक में जो कि मर जायेंगे,
वह अमर नाम दुनिया में कर जायेंगे ।
ये न पूछो कि मर कर किधर जायेंगे,
वह जिधर भेज देगा उधर जायेंगे ।।

देश उद्धार करने में एक दो नहीं,
देख लेना हजारों ही सर जायेंगे ।
आप दिखला रहे हैं किसे तुरशियाँ,
ये नशे वो नहीं जो उतर जायेंगे ।।

तीर पर तीर बरसें दबेंगे नहीं,
चोट खाकर तो सीने उभर जायेंगे ।
लो अछूतों को छाती से लगा हिन्दुओ,
वरना ये लाल गैरों के घर जायेंगे ।।
गर मौहब्बत का मरहम लगाते रहे,
जख्मे दिल एक दिन इनके भर जायेंगे ।
आप मानें न मानें खुशी आपकी,
हम 'मुसाफिर' हैं कल अपने घर जायेंगे ।।

अमर है तू फानी नहीं है

वो मुर्दा है जो स्वाभिमानी नहीं है,
जिस इन्सां की आंखों में पानी नहीं है ।
विधाता मेरी कौम को हो गया क्या,
कि जिन्दा तो है पर जिन्दगानी नहीं है ।।
बुजुर्गो हकीकत, बयां कर रहा हूं,
ये किस्सा नहीं और कहानी नहीं है ।
लगाते हैं हर एक की जय के नारे,
किसी की कोई बात मानी नहीं है ।।
उठे तो उठे कैसे वो कौम जिसके,
जवानों में जोशे जवानी नहीं है ।
उठेंगे तो तूफान बनकर उठेंगे,
अभी हमने उठने की ठानी नहीं है ।।
अरे गाफिलो एक हो जाओ मिलकर,
अगर मार गैरों की खानी नहीं है ।
हैं हिन्दू भी मुसलिम भी हिन्दोस्तां में,
मगर कोई हिन्दुस्तानी नहीं है ।।
तबाह हो चुका है गुलामी से लेकिन,
कोई अब भी भारत का सानी नहीं है ।
'मुसाफिर' न कर मरने जीने का खटका,
अजर और अमर है तू फानी नहीं है ।।

मेरा क्या करेंगे

मुझे मारकर वो मेरा क्या करेंगे,
मैं फानी नहीं हूं फना क्या करेंगे ।

हथेली पै जो सर लिये फिर रहा हो,
वो सर उसका धड़ से जुदा क्या करेंगे ।
जिन्हें दर्दे दिल से फुरसत नहीं है,
वो दर्दे वतन की दवा क्या करेंगे ।।
हमीं गर्क करते हैं जब अपना बेड़ा,
तो बतलाओ फिर नाखुदा क्या करेंगे ।
जिन्हें बात सुनना भी भाता नहीं है,
वो पूरा दिली मुद्दआ क्या करेंगे ।।
जो लड़ते हैं दिन रात बे बात बाहम,
दयानन्द का हक अदा क्या करेंगे ।
भले खुद नहीं हैं जो इन्सां 'मुसाफिर',
भला वह किसी का भला क्या करेंगे ।।

हैदराबाद जेल में

ये किसका फसाना है ये किसकी कहानी है ।
सुनकर जिसे महफिल की हर आंख में पानी है ।।

जलने में मजा क्या है शमये सदाकत पर ।
दीवाने पतंगों ने जल जाने की ठानी है ।।
दे मुझको मिटा जालिम मत धर्म मिटा मेरा ।
ये धर्म मेरा ऋषि-मुनियों की निशानी है ।।
ताकत का तकव्वुर है तुमको तो फिर हम में भी ।
कुछ गैरते कौमी है कुछ जोशे जवानी है ।।
मत देर करो उठो ए देश के नवयुवको ।
बिगड़े हुए भारत की फिर बात बनानी है ।।
क्या खाक लिखे जब कि महबस में 'मुसाफिर' को ।
दो ज्वार की रोटी हैं और दाल का पानी है ।।

गीत

सारी दुनिया में दिन हिन्द में रात है ।
हिन्द वालो बता दो यह क्या बात है ।।
देखते क्या हो ए आर्य वीरो उठो,
कौम की आबरू आप के हाथ में है ।
बात बातों से हरगिज बनेगी नहीं,
मर मिटो बात पर बात की बात है ।।
हम अमर हैं जहां से मिटेंगे नहीं,
जो मिटा दे हमें किसकी औकात है ।
वेद का ज्ञान दुनिया से मिटने न दो,
वेद का ज्ञान ईश्वर की सौगात है ।।
चाल चौकस चलो पर बिसते जहां,
चाल चलने में चूके तो फिर मात है ।
क्या हुआ गर कोई अपना साथी नहीं,
साथ है कुल जमाना, जो वह साथ है ।।
है मुसाफिर खतावार तो क्या हुआ ।
बेखता तो फ़कत एक ही जात है ।।

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत

उद्‌बोधन

उठो आर्य वीरो ! ये सुस्ती है कैसी,
संभलने के दिन हैं संभलना पड़ेगा ।।१।।
लगी दौड़ उन्नति की जंग क्षेत्र में है,
तुम्हें सब से आगे निकलना पड़ेगा ।।२।।
सकल लोक उपकारिणी वेदवाणी,
विमल सभ्यता और सुराज्यादि के हित ।
धधकती हुताशन में जलना पड़ेगा,
तुम्हें घोर विष भी निगलना पड़ेगा ।।३।।
दयानन्द ऋषिराज के सार्वभौमिक–
सदोद्देश्य की हो नहीं पूर्ति जिनसे,

उन्हीं संस्थाओं व दल-बन्दियों की,
विकट दलदलों से निकलना पड़ेगा ।।४।।

खुले आम नित नाच रंग हो रहे हैं,
यहां सांस्कृतिक कार्यक्रम के बहाने ।
पतन घोर चारित्र्य बल का हो जिससे,
रवैय्या वो दूषित बदलना पड़ेगा ।।५।।

मृतक राष्ट्र को चेतना दी तुम्हीं ने,
न हो तुच्छ तुम है महाशक्ति तुम में ।
अरे क्रान्ति के, शान्ति के अग्रदूतो !
तुम्हें अग्रणी बनके चलना पड़ेगा ।।६।।

प्रबल युक्ति से शक्ति से है बचाना,
सकल राष्ट्र को आक्रमणकारियों से ।
कृतघ्नी कुटिल सांप घर में घुसे जो,
प्रथम मुख उन्हीं का कुचलना पड़ेगा ।।७।।

कहो जाके यह नारियों से कि तुम भी,
उठो ! देश को शत्रुओं से बचालो ।
इन्हीं चूड़ी वाले करों में ले राइफिल,
निडर सिंहनी सम मचलना पड़ेगा ।।८।।

अगर चाहते हो "प्रकाशार्य" भारत,
अखिल विश्व गुरु की करे प्राप्त पदवी ।
दयानन्द ऋषि के बताये सुपथ पर,
तुम्हें पूर्ण श्रद्धा से चलना पड़ेगा ।।९।।

स्वामी दयानन्द

देखो स्वामी दयानन्द क्या कर गया ।
गुलशने हिन्द को फिर हरा कर गया ।।

कुल मजाहिब में ऐसी मची खलबली ।
गोया महशर का आलम बरपा कर गया ।।

तर्क के तीर बरसाये इस जोर से ।
होश पाखंडियों के हवा कर गया ।।

उम्र भर की सेवा, हक परस्ती रहा ।
जान तक राहे हक में फिदा कर गया ।।
वे बुरे हैं जो कहते हैं उसको बुरा ।
वो भला था हमारा भला कर गया ।।
गर्क होने को थे जो कि मझधार में ।
नाखुदा उनको मर्द खुदा कर गया ।।
अय 'मुसाफिर' उसी से शफा पाओगे ।
जो कि तजबीज स्वामी दवा कर गया ।।

आर्य बनाना है

आर्यकुमारो यही व्रत धारो देश जगाना है ।
आर्य बनाना है ।।

सब सत्य विद्या और पदार्थ विद्या से जाने जाते ।
उन सबका है आदि मूल परमेश्वर ये बतलाते ।
चौबीस अक्षरी मन्त्र गायत्री सबको सिखाना है ।।१।।
वेद का पढ़ना पढ़ाना सुनना और सुनाना ।
समझें इसको परम धर्म ना कोई करे बहाना ।
पत्थर पूजें नाहक झूजें, उन्हें हटाना है ।।२।।
पञ्च यज्ञ घर-घर में करना सीखें सब नर-नारी ।
दुर्व्यसनों से दूर रहें बनें सदाचारी उपकारी ।
अभक्ष्य पदार्थ समझ अकार्थ उन्हें छुड़ाना है ।।३।।
मातृवत् परदारेषु पर धन मिट्टी जाने ।
वैदिक शिष्टाचार को वर्ते सीखें ढंग पुराने ।
हो गुण अन्दर वीर "वीरेन्द्र" झुके जमाना है ।।४।।

देश को स्वर्ग बना देंगी

हम आर्य वीराङ्गनाएँ हैं दुनिया में धूम मचा देंगी ।
संकट जो धर्म पे आयेगा उसको हम परे हटा देंगी ।। हम०
सीता सावित्री माता का आदर्श हमारे सम्मुख है ।
रावण जैसों की लंका को हम मिट्टी में मिलवा देंगी ।। हम०

ओ दुष्ट दुराचारी इन्सां हमको बद आंखों से देखें ।
बन किरणवती दुर्गा जैसी फिर उनको हम दिखला देंगी ।। हम०
ऐ देश धर्म के दीवानो इस मातृशक्ति का मान करो ।
हम विजय आप की चाहेंगी और अपना नाम मिटा देंगी ।। हम०
इस देश में स्त्री जाति का सम्मान जो पहले होता था ।
वेदों की शिक्षा पाकर के इस देश को स्वर्ग बना देंगी ।। हम०

भजन

आदत बुरी सुधार ले, बस हो गया भजन,
मन की तरंगें मार ले, बस हो गया भजन ।

आया कहां से कौन तू और जायेगा कहां ?
इतना ही तू विचार ले, बस हो गया भजन ।।१।।

दुनिया तुझे बुरा कहे तू शेर बन के रहे,
वाणी का स्वर सुधार ले, बस हो गया भजन ।।२।।

है दोष तेरी दृष्टि में दुनिया निहारता,
समता का अन्जन डाल ले, बस हो गया भजन ।।३।।

भजन

वीरदल है वीरदल आर्यों का वीरदल,
राम का सन्देश है, कृष्ण का उपदेश है ।
महर्षि का तेजबल, आर्यों का वीर दल ।।

शेरों का यह शेर है, बहादुर और दिलेर है,
आर्यों में है सबल, आर्यों का वीर दल ।

टक्कर में जो आयेगा, रोयेगा पछतायेगा,
शत्रु का दे सर कुचल, आर्यों का वीर दल ।।

ओ३म् ध्वज आकाश में, दुनिया के इतिहास में,
देश और विदेश में, आर्यों का वीर दल ।

देश को जगायेगा, क्रान्ति मचायेगा,
दे मचा उथल-पुथल, आर्यों का वीर दल ।।

आर्यों की शान है, चन्द्रमा समान है,
कार्यों में है सफल, आर्यों का वीर दल ।
ओ३म् हमारा देव है वेद हमारा धर्म ।
सत्य हमारा कर्म है, सब को बताये चल ।।

आर्य वीर दल

बढ़ता चल बढ़ता चल आर्य वीर दल ।
सत्यमार्ग पर चला रुके न एक पल ।।

प्रेम का संचार परस्पर सदा रहे ।
द्वेष भाव लेश मात्र भी जुदा रहे ।।
मन रहे पवित्र कि जैसे हो गंगा जल ।
बढ़ता चल बढ़ता चल आर्य वीर दल ।।...

सेवा भाव मन में सर्वदा निष्काम हो ।
कर्त्तव्य कर्म में न कभी भी विराम हो ।।
हो पहाड़ की तरह निश्चय सदा अचल ।
बढ़ता चल बढ़ता चल आर्य वीर दल ।।...

राह में तुम्हारी मुश्किलें भी आएंगी ।
भीम रूप धार कर तुम्हें डराएंगी ।।
चीर कर मुसीबतों को जाओ तुम निकल ।
बढ़ता चल बढ़ता चल आर्य वीर दल ।।...

पीठ पर तुम्हारी महर्षि का हाथ है ।
ईश की दया सदा तुम्हारे साथ है ।।
भक्ति भाव से 'पथिक' जनम करो सफल ।
बढ़ता चल बढ़ता चल आर्य वीर दल ।।...

प्रयाण गीत

वेद के प्रचार में देश के सुधार में,
हो निःशंक अपना पांव आगे को बढ़ाये जा ।
जाति को जगाये जा ।।

पथ में हो नहीं पहाड़ और हो कांटों की बाढ़,
फिर भी तू संभल-संभल पांव को जमाये जा ।
आत्मबल दिखाये जा ।।

तू अजर है तू अमर है भय न मौत का भी कर,
बन के शक्ति धाम काम बिगड़े सब बनाये जा ।
वीर व्रत निभाये जा ।।

तू ऋषि सन्तान है तू सदा महान् है,
ज्ञान का पुनीत दीप विश्व में जलाये जा ।
यश अमर कमाये जा ।।

जल रही है फूट ज्वाल आज हर तरफ कराल,
संगठन नहीं विशाल यत्न कर बढ़ाये जा ।
आग को बुझाये जा ।।

बढ़ रहा है दैत्य दल है मनुष्यता विकल,
कर स्व शक्ति का प्रयोग दैत्य दल मिटाये जा ।
मनुष्यता बचाये जा ।।

युग तुझे पुकारता पथ तेरा निहारता,
तू अशान्त प्राणियों को शान्ति रस पिलाये जा ।
सुख सुमन खिलाये जा ।।

चित्रकार (श्री निरंजनसिंह जी)

चित्रकार चित्र ऐसे हाथ से उतार दे ।
केसरिया हो रंग लाल शोणित से निखार दे ।।

चित्र में हों दयानन्द वेदों का प्रचार करें ।
मिटाकर अधर्म जग में धर्म का प्रचार करें ।
श्रद्धानन्द गुरुकुल खोले शिक्षा का प्रचार करें ।
आर्यवीर लेखराम दलितों का उद्धार करें ।
महाराजा सूरजमल और पन्ना के विचार दे ।। चित्रकार०।।१।।

चेतक पर प्रताप राणा रण के लिए जाते हों ।
घास की रोटी महाराणा के भूखे बच्चे खाते हों ।
दीवारों में फतहसिंह जोरावर चिने जाते हों ।
हकीकतराय धर्महेतु गरदन को कटाते हों ।
बन्दा वैरागी की खाल चिमटों से उतार दे ।। चित्रकार०।।२।।

लक्ष्मीबाई महारानी का युद्ध होता हुआ भारी ।
तांत्या टोपे वीर और मंगल पाण्डे क्रान्तिकारी ।
काले पानी जाते हुए वीर सावरकर व्रतधारी ।
तिलक जी आजादी हेतु करते हों उद्‌घोष भारी ।
शिवा जी की माता जीजाबाई रचनाकार दे ।। चित्रकार०।।३।।

लाला लाजपत पर पुलिस लाठियां बरसाती हो ।
साण्डर्स की मृत्यु बनकर भगत की गोली आती हो।
मार दो गोली श्रद्धानन्द की खुली हुई छाती हो ।
आजाद हैं आजाद और शेखर की ध्वनि आती हो।
डायर को लन्दन में जाकर ऊधमसिंह मार दे ।। चित्रकार०।।४।।

रामप्रसाद बिस्मिल फांसी ऊपर गाना गाते हों ।
सुभाषचन्द्र बोस सेना जर्मन में बनाते हों ।
राजगुरु, सुखदेव, भगतसिंह हंसकर फांसी खाते हों।
लौह पुरुष सरदार पटेल भारत एक बनाते हों ।
लालबहादुर शास्त्री जैसे निरञ्जनसिंह विचार दे ।। चित्रकार०।।५।।

बलिदान करो बलिदान करो

वेदों का सद् उपदेश यह है,
बलिदान करो बलिदान करो ।
शास्त्रों का मत विशेष यह है,
बलिदान करो, बलिदान करो ।।१।।

मेघों ने निज बलिदान किया,
नभ में चढ़ कर जल–दान दिया ।
इस लिए गरज कर कहते हैं,
बलिदान करो, बलिदान करो ।।२।।

वृक्षों ने पुष्प लुटा डाले,
विटपों ने फल भू पर घाले ।
दिन रात बताते रहते हैं,
बलिदान करो, बलिदान करो ।।३।।

जिन मनुजों ने बलिदान किया,
शाश्वत यश जग में जीत लिया ।
उन के चरित्र का सार यही,
बलिदान करो, बलिदान करो ।।४।।

ऋषिवर का है सन्देश यही,
है आर्य धर्म उपदेश यही ।
जब तक जीते जाओ जग में,
बलिदान करो, बलिदान करो ।।५।।

बलिदान वृक्ष फल लाता है,
संसार सदा सुख पाता है ।
इस लिये हमारा धर्म यही,
बलिदान करो, बलिदान करो ।।६।।

ओ३म् ध्वजा लहराओ

ओ३म् ध्वजा लहराओ वीरो बढ़े चलो,
सोया देश जगाओ वीरो बढ़े चलो ।
बिगड़ी दशा बनाओ वीरो बढ़े चलो ।।
ओ३म् ध्वजा लहराओ......

परम पिता का आश्रय लेकर, दयानन्द–सा हृदय लेकर ।
वैदिक नाद बजाओ, वीरो बढ़े चलो ।।
ओ३म् ध्वजा लहरादओ......

जर्मन पर और अमरीका पर, योरुप पर और अफ्रीका पर।
फिर से धाक जमाओ, वीरो बढ़े चलो ।।
ओ३म् ध्वजा लहराओ । वीरो......

लाल किले की चोटी पर भी, राष्ट्रपति की कोठी पर भी।
ओ३म् ध्वजा लहराओ, वीरो बढ़े चलो ।।
ओ३म् ध्वजा लहराओ । वीरो......

सदाचार का दौर चले फिर, नैतिकता, चहुँ ओर फले फिर।
सबको श्रेष्ठ बनाओ, वीरो बढ़े चलो ।।
ओ३म् ध्वजा लहराओ । वीरो......

रहे न कोई भ्रष्टाचारी, न कोई मन्त्री, नहीं अधिकारी ।
ऋषियों का युग लाओ, वीरो बढ़े चलो ।।
ओ३म् ध्वजा लहराओ । वीरो......

राम राज्य फिर से लाना है, प्रेम तराना फिर गाना है ।
सबको गले लगाओ, वीरो बढ़े चलो ।।
ओ३म् ध्वजा लहराओ । वीरो......

भजन

प्रभो ! वेद विद्या का विस्तार कर दो ।
दु:खी देश भारत का उद्धार कर दो ।।
जमाना हुआ सो रही आर्य जाति ।
इसे मोह निद्रा से बेदार कर दो ।।
तपोबल के पौधे भी मुरझा चुके हैं ।
उन्हें ज्ञान अमृत से गुलजार कर दो ।।
भुजाओं में दो भीम सा बल हमारे ।
रगों में ऋषि रक्त संचार कर दो ।।
बचाने को भारत की नौका भंवर से ।
सदा आर्यवीरों को तैयार कर दो ।।

आर्य वीरो

आओ आर्य वीरो आओ,
वीर बनो तुम देश उठाओ ।
नव जीवन जब धार लिया है,
मन को अपने मार लिया है ।
दिल में दृढ़ व्रत धार लिया है,
आओ आर्य वीर कहाओ ।।१।।
भाई भाई हैं हम सारे
धर्म कोष के खोजन हारे ।
सदा पाप से रहते न्यारे,
आओ हिल-मिल प्रेम बढ़ाओ ।।२।।
सेवा कार्य सदा करना है,
निर्भय भावों को भरना है ।
विपदाओं से क्या डरना है,
आओ धर्म ध्वजा फहराओ ।।३।।
दयानन्द के सेवक चिर हैं,
वेद पुष्प के हम मधुकर हैं ।
आर्यपुत्र हैं सब बे डर हैं,
वीर बनो निज देश उठाओ ।।४।।

भजन

ऐ वतन के नौजवां, जा रहा है तू कहां ?
याद कर वो दासतां, जिसको गाता है जहां ।।

थरथराती थी जमीं, जब कदम धरता था तू ।
काल भी हो सामने पर, नहीं डरता था तू ।
आज भी करते बयां, ये जमीं और आसमां ।।१।।
रहजनों हमलावरों का, सर झुकाया था कभी ।
बाजुये कुव्वत ने तेरी, नभ हिलाया था कभी ।
तू मगर बढ़ता गया, हाथ ले तीरो कमान ।।२।।
तूने रखी लाज अपने बहनों के सिन्दूर की ।
चाल भी चलने न पायी, दुष्ट पापी क्रूर की ।
उनकी वो खर मस्तियां, मेट डाली हस्तियाँ ।।३।।
क्या कहूं बेमोल तेरा, आज कैसा रंग है ।
रंगे महफिल में भी तेरा, रंग सब बद रंग है ।
खो दिया सब हौसला, शिवा और प्रताप का ।।४।।
ऐ वतन के नौजवाँ......

जगाया तुम को कितनी वार

वेदों का आदेश वही है गीता का उपदेश वही है,
अर्जुन को सन्देश वही है ।
चलते हो तुम क्यों न कृष्ण की शिक्षा के अनुसार,
जगाया तुम को कितनी बार ।।१।।

राज्य बुद्ध ने छोड़ दिया था घर से नाता तोड़ दिया था,
स्नेह योग से जोड़ दिया था ।
धर्म-चक्र के परिवर्त्तक का भूल गये उपकार,
जगाया तुम को कितनी बार ।।२।।

बौद्ध संघ में मिलना कुछ दिन नहीं वहां से हिलना,
और श्लोक वार्तिक का खिलना ।
कभी कुमारिल के जीवन पर करते नहीं विचार,
जगाया तुम को कितनी बार ।।३।।

शङ्कर ने जीवन दे डाला आत्मा से तुम्हें सम्भाला,
अन्धकार में किया उजाला ।
कुम्भकरण की निद्रा से तुम करो न अब तो प्यार,
जगाया तुम को कितनी बार ।।४।।

मुझ को पतित बताने वालो पथ में कभी सताने वालो,
पय में कांच मिलाने वालो ।
तुम पर मैंने आज दिया है जीवन अपना वार,
जगाया तुम को कितनी बार ।।५।।

अस्सी घाव लगे थे तन में फिर व्यथा नहीं थी मन में,
दक्ष खड्ग के सञ्चालन में ।
तुम्हें बचाने को चमकी थी सांगा की तलवार,
जगाया तुम को कितनी बार ।।६।।

शत्रु हृदय दहलाने वाला पड़ते ही अकबर से पाला,
चमक पड़ा था जिस का भाला ।
उस प्रताप के रण विक्रम को तुम ने दिया बिसार,
जगाया तुम को कितनी बार ।।७।।

विश्व शिवराज बली थे रण में कृष्ण समान छली थे,
जिन के सब उद्योग फली थे ।
नहीं सुनी क्या तुम ने उनकी रण में जय जयकार,
जगाया तुम को कितनी बार ।।८।।

जिसकी तेज खड्ग के आगे अपना प्राण यवन ले भागे,
फिर भी मारे गये अभागे ।
उस बन्दा ने मचा दिया था भीषण हाहाकार,
जगाया तुम को कितनी बार ।।९।।

समय नहीं है यह सोने का निद्रा में अवसर खोने का,
गया जमाना अब रोने का ।
दस्यु दलन से हलका कर दो आर्यभूमि का भार,
जगाया तुम को कितनी बार ।।१०।।

भजन

तर्ज—बड़ी मस्तानी है मेरी……

जीने से तेरे कोई सुख ना हुआ, मरने से तेरे कोई दुःख ना हुआ।
यह क्या जिन्दगानी है, तेरी नौजवां सुन यह कहानी है। तेरी……नौजवां।

कदम-कदम से तेरे धरती में लरज होती थी ।
हुंकार तेरी नभ में घन जैसी गरज होती थी ।
ना वह चमक ना वह दमक कहां जोशे जवानी है । तेरी……।१।
हंसना तेरा था ऐसा जैसे फूलों की होती हो वर्षा ।
क्रुद्ध होना तेरा जग में कर देता था कहर बरपा ।
बात जो कभी तूने कही वो दुनिया ने मानी है । तेरी……।२।
तेरी नजर से नजरें नहीं कोई मिला सकता था ।
तेरा कदम जहां में नहीं कोई हिला सकता था ।
निर्जीवों को जीवन दिया, कहां वह रवानी है । तेरी……।३।
तेरे ही घर के अन्दर आज होती है तेरी पिटाई ।
"प्रेमी" तू राग गाये आज गैरत को भी गैरत आई ।
जीवन तबाह खुद ही किया यह बड़ी नादानी है । तेरी……।४।

उद्‌बोधन

उठ, आर्य वीर, अब हुआ भोर,
रजनी का बीता तिमिर घोर।
निज निज नीड़ों से निकल निकल,
पक्षी गण करते मृदुल शोर ।।
यह अग्नि शिखा सुविशाल उठे ।
प्राचीनतम हो अति लाल उठे ।।
घर घर वन वन में धधक धधक कर ।
इस हवन शिखा की ज्वाला उठे ।।
फिर वेदों की हुंकार उठे,
वह पावन मन्त्रोच्चार उठे।
हो दिग् दिगन्त में व्याप्त पुनः,
ऐसी गम्भीर पुकार उठे ।।

फिर इन्द्र वरुण रवि सोम जगें,
घर घर में फिर से होम जगें।
इस आर्य देश की भूमि जगे,
इस आर्य भूमि का व्योम जगे।।

फिर ऋषियों की संतान उठे,
अपना सुषुप्त अभिमान उठे।
फिर म्लेच्छ निवह निधने कठोर,
वीरों की कठिन कृपाण उठे ।।

उठ जाग वीर अब हुआ भोर,
पक्षी गण करते मृदुल शोर।
फिर वेदों का सन्देश सुना,
बीता रजनी का तिमिर घोर।।

भजन

मरण एक हो वरण एक हो जीवन एक समान बने ।
मेरा देश महान् बने ।।१।।

सिंहों से लड़ने वाले हों,
अवसर पर लड़ने वाले हों ।
हंसते हंसते मौत मसल कर,
अम्बर पर चढ़ने वाले हों ।।
वज्र बने दुश्मन को प्रिय को फूलों की मुस्कान बने ।
मेरा देश महान् बने ।।२।।

उठें देश के लिये उठें हम,
जियें देश के लिये जियें हम ।
गलें देश के लिये गलें हम,
मरें देश के लिये मरें हम ।।
तन में मन में यही ध्वनि हो भारत महिमावान् बने ।
मेरा देश महान् बने ।।३।।

रोज उषा हंस कर कहती है,
रोज निशा हंस कर कहती है ।

महा सृष्टि में यही स्वर्ग है,
भागीरथी जहां बहती है ॥
तीस कोटि कल कल कंठों से ध्रुव भेदी नवगान बने ।
मेरा देश महान् बने ॥४॥

जगा दो भारत को भगवान्

काश्मीर पंजाब अवध ब्रज प्रिय नैपाल भूटान,
महा कौशल मालव उठ बैठे गरजे राजस्थान ।
जगा दो भारत को भगवान् ॥१॥

मैं बंगाली तू मद्रासी इस का रहे न भान,
गंगा यमुना सम मिल जायें सब भारत सन्तान ।
जगा दो भारत को भगवान् ॥२॥

ब्राह्मण हों तेजस्वी त्यागी गौतम कपिल समान,
सन्त सुधारक दयानन्द से करें वेद व्याख्यान ।
जगा दो भारत को भगवान् ॥३॥

क्षत्रिय हों राणा प्रताप से रण बांके बलवान्,
स्वतन्त्रता हित करें न्यौछावर हंस हंस निज प्राण ।
जगा दो भारत को भगवान् ॥४॥

भामाशाह समान वैश्य हों करें देश हित दान,
शूद्र बनें रैदास भक्त से कबीर से मतिमान् ।
जगा दो भारत को भगवान् ॥५॥

सावित्री सीता दमयन्ती फिर से प्रकटें आन,
दुर्गावती लक्ष्मीबाई की चमके चपल कृपाण ।
जगा दो भारत को भगवान् ॥६॥

बालक ध्रुव प्रह्लाद सदृश हों धरें आप का ध्यान,
वीर हकीकत सम हो जावें धर्म हेतु बलिदान ।
जगा दो भारत को भगवान् ॥७॥

हम आर्य वीर कहलाते हैं

हम में स्वदेश का मान भरा,
गौरव गरिमा सम्मान भरा ।
आर्यत्व जननि के प्यारों का,
उत्तापित रक्त अजान भरा ।।
हम वीरों को दहलाते हैं ।
हम आर्य वीर कहलाते हैं ।।१।।

हम में वीरों का गान भरा,
रणवीरों का अरमान भरा ।
नूतन अतीत संहारों का,
स्वर्णिम इतिहास महान् भरा ।।
हम शोणित से नहलाते हैं ।
हम आर्य वीर कहलाते हैं ।।२।।

हम में नव जीवन दान भरा,
गुरु-वर सञ्चालित ज्ञान भरा ।
जीवन-शहीद सुकुमारों का,
हंसते हंसते बलिदान भरा ।।
हम धीर वीर कहलाते हैं ।
हम आर्य वीर कहलाते हैं ।।३।।

वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे

मैथिलीशरण गुप्त

विचार लो कि मर्त्य हो, न मृत्यु से डरो कभी ।
मरो परन्तु यों मरो, याद जो करें सभी ।।
हुई न यों सुमृत्यु तो, वृथा मरे वृथा जिये ।
मरा नहीं वही कि जो जिया न आपके लिए ।।
यही पशु प्रवृत्ति है कि आप ही आप चरे ।
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिये मरे ।।१।।

रहो न भूल के कभी मदान्ध तुच्छ वित्त में ।
सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में ।।

अनाथ कौन है यहां ? त्रिलोकनाथ साथ हैं ।
दयालु दीनबन्धु के बड़े विशाल हाथ हैं ।।
अतीव भाग्यहीन है अधीर भाव जो भरे ।
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ।।२।।

चलो अभीष्ट मार्ग पर सहर्ष खेलते हुए ।
विपत्ति विघ्न जो पड़ें उन्हें ढकेलते हुए ।।
घटे न हेल मेल हाँ, बढ़े न भिन्नता कभी ।
अतर्क एक पन्थ के सतर्क मान्य हों सभी ।।
यही समर्थ भाव है कि तारता हुआ तरे ।
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ।।३।।

भजन

जिन्दगी है शान की, शान से बिताये जा ।
आन बान शान पर तू अपना सिर कटाये जा ।।
जिन्दगी है एक दीप और शान उसमें तेल ।
तेरा दीप जितनी देर जल सके जलाये जा ।।
जिन्दगी है एक कटार और शान उसमें धार ।
अपनी इस कटार को सदैव चमचमाये जा ।।
तू है आर्य नौजवान, ज्ञान आर्य का निशान ।
उँचा उठाये तू निशान ये ही गीत गाये जा ।।
शान के लिये प्रताप, झेलता रहा त्रिताप ।
उस महान् वीर के गुणानुवाद गाये जा ।।
चाहे चली जाये अपनी जान, पर न जाये अपनी शान ।
जान भी गवां के अपने देश को बचाये जा ।।

वतन के गीत गाए जा

कदम कदम बढ़ाए जा, वतन के गीत गाए जा ।
यह जिन्दगी है देश की, तू देश पर लुटाये जा ।।
जय हिन्द गीत गाए जा ।
आजाद देश है तेरा ।। कदम कदम...

तू शेरे हिन्द आगे बढ़,
मरने से कभी न डर ।
फलक तलक उठाके सर, जोशे वतन बढ़ाये जा ।।
जय हिन्द गीत गाए जा ।
आजाद देश है तेरा ।। कदम कदम...

हिम्मत तेरी बढ़ती रहे,
ईश्वर तेरी सुनता रहे ।
जो सामने तेरे अड़े, तू खाक में मिलाए जा ।।
जय हिन्द गीत गाए जा ।
आजाद देश है तेरा ।। कदम कदम...

नर हो, न निराश करो मन को

मैथिलीशरण गुप्त

नर हो, न निराश करो मन को ।

कुछ काम करो, कुछ काम करो,
जग में रह कर कुछ नाम करो ।
यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो,
समझो जिससे यह व्यर्थ न हो ।
कुछ तो उपयुक्त करो तन को,
नर हो, न निराश करो मन को ।।१।।

संभलो कि सुयोग न जाय चला,
कब व्यर्थ हुआ सदुपाय भला ?
समझो जग को न निरा सपना,
पथ आप प्रशस्त करो अपना ।
अखिलेश्वर है अवलम्बन को,
नर हो, न निराश करो मन को ।।२।।

निज गौरव का नित ज्ञान रहे,
हम भी कुछ हैं यह ध्यान रहे ।
सब जाय अभी पर मान रहे,
मरणोत्तर गुंजित गान रहे ।
कुछ हो, न तजो निज सावन को,
नर हो, न निराश करो मन को ।।३।।

संस्कृति पुरानी कहां है ?

कुं० जोरावरसिंह 'सिंहकवि'

हमारी वह गौरव कहानी कहां है ?
कहो आर्य संस्कृति पुरानी कहां है ?

बहाई थी जिसने कभी शान्ति धारा ।
वह कल्याणमय वेद वाणी कहां है ?।।

बनाया था मानव को मानव जिन्होंने ।
कोई ऋषियों-सा तत्त्वज्ञानी कहां है ?।।

महाराणा प्रताप से देशप्रेमी ।
शिवाजी सदृश स्वाभिमानी कहां है ?।।

हैं दानी बहुत यों तो अब भी यहां पर ।
मगर कर्ण सा कोई दानी कहां है ?।।

राष्ट्र-निर्माण का आज व्रत लीजिये

अपने बच्चों को तालीम दो धर्म की ।
देश पर इनको मरना सिखा दीजिये ।।१।।

जिन्दगी कौम की चाहते हो अगर ।
तो छुआछूत का गढ़ मिटा दीजिये ।।२।।

एक हो जायेंगे मिलके छोटे-बड़े ।
देश में प्रेम-गङ्गा बहा दीजिये ।।३।।

जो तुम्हारे हैं उनको जुदा मत करो ।
गैर आयें तो अपना बना लीजिये ।।४।।

हर किसी से न बेबात अकड़ो कभी ।
बात पर शौक से सर कटा दीजिये ।।५।।

लाज है गर ''मुसाफिर'' दयानन्द की ।
नाद वेदों का घर-घर बजा दीजिये ।।६।।

छत्रपति रणवीर शिवा जी

भारत के नर नार सभी करते हैं गौरव गान ।
छत्रपति रणवीर शिवा जी फौलादी इनसान ।।

यह है माता जीजा बाई की अखियों का तारा ।
जिसने वीर कथाएं गा गा मन मस्तिष्क संवारा ।
माता का यह लाल बना भारत माता की शान ।। छत्रपति…
दुश्मन की ताकत के आगे कभी नहीं घबराया ।
मुट्ठी भर वीरों को ले कर लाखों से टकराया ।
साक्षात् साहस की मूरत पर्वत की चट्टान ।। छत्रपति…
हमलावर मुगलों की सेना जब रण में आ धमकी ।
शत्रु पर बिजली बनकर तलवार शिवा की चमकी ।
तोबा तोबा बोल उठा हर मुग़ल पकड़ कर कान ।। छत्रपति…
शाइस्ता खां कपट वेश में इन्हें मारने आया ।
बुद्धिमत्ता से उस को ही नरक धाम पहुंचाया ।
रणनीति में कुशल समय पर चाल गए पहचान ।। छत्रपति…
धोखा दे औरंगजेब ने शेर जेल में डाला ।
धूल झोंक सब की आंखों में निकल गया मतवाला ।
मुगल सन्तान मुंह में उंगली डाल हुई हैरान ।। छत्रपति…
हर पर्वत का हर पत्थर कहता है अमर कहानी ।
गूंज रहा है नाम गगन में वीर शिवा बलिदानी ।
'पथिक' हमेशा याद करेगी वीरों की सन्तान ।। छत्रपति…

सतलुज के किनारे

तर्ज—अजब है मालिक तेरा जहां चिराग कहां रोशनी कहां ।

वतन है सेवक चले चले ।
शहीद हुए हैं चिता जले ।
रात भी गम से नहीं ढले ।
शहीद हुए हैं चिता जले ।।

निकले अरमां शोले बन कर इन वीरों के दिल के ।
एक चिता में साथ जले तीनों साथी मिल के ।।

अमर हुए आकाश तले ।
शहीद हुए हैं चिता जले ।
वतन के सेवक चले चले ।।...
खून से मिलकर खून बनेगा, सतलुज का यह पानी ।
बादल बन कर बरस पड़ेगी दुनिया में यह कहानी ।।
सारी खुदाई यह देख ले ।
शहीद हुए हैं चिता जले ।
वतन के सेवक चले चले ।।...
भारत के ये राजदुलारे और अखियों के तारे ।
'पथिक' लगेगा सेहरा इन को आजादी के द्वारे ।।
जग मालाएं इन के गले ।
शहीद हुए हैं चिता जले ।
वतन के सेवक चले चले ।।...

भजन

करना है निर्माण हमें तो करना है ।
आर्य राष्ट्र निर्माण हमें तो करना है ।।
देश में जन्म लिया है तूने ।
माँ का दूध पिया है तूने ।
जीवन अपना दान हमें तो करना है ।।१।।
कहां गई वो तेरी जवानी ।
खून तेरा क्या बन गया पानी ।
कष्ट महान् आसान हमें तो करना है ।।२।।
आर्यावर्त्त के टुकड़े हो रहे ।
आर्य वीरो तुम क्यों सो रहे ।
भारत का उत्थान हमें तो करना है ।।३।।
ऋषिवर ने जो मार्ग दिखाया ।
श्रद्धानन्द ने है अपनाया ।
लेखराम बलिदान हमें तो करना है ।।४।।
आर्य वीरो अब घर-घर जाकर।
सोया आर्य फिर से जगाकर।
वेद पढ़ो अभिमान हमें तो करना है ।।५।।

भजन

तर्ज : बहुत प्यार करते हैं तुमको

जवानो तुम्हारी, जवानी कहां है ?
तेरी वीरता वो, पुरानी कहां है ?

जिन्हें आसमां के, सितारों ने देखा,
जिन्हें आजमां के, हजारों ने देखा ।
तुम्हारी वो जोशे-जवानी कहां है ?
कहां है तुम्हारी, समर की कलाएं,
चमकती कटारें, फड़कती भुजाएं ।
मचलती हुई जिन्दगानी कहां है ?
तुम्हीं ने जहां में, उजाला किया है,
कहा जो जुबां से, वो पूरा किया है ।
तेरे रक्त में, वो रवानी कहां है ?
उठो आर्य वीरो ! जगत् को जगा दो,
उमंगें तरंगें, धरा पर बिठा दो ।
वतन की तुम्हें, पासवानी कहां है ?

गीत

तर्ज : मुहब्बत की राहों में

जवानो जवानी में, चलना संभल के,
आती नहीं ये, दुबारा निकल के ।

कठिन है जवानी की मंजिल ये प्यारी,
कभी लड़खड़ा जाओ कुछ दूर चल के ।
विषय रूपी रहजन, अनेकों मिलेंगे,
ख़बरदार कोई न, जे जाए छल के ।
सुधर जाए परलोक, जिससे यत्न कर,
जब आयेगी मृत्यु, न जायेगी टल के ।
''वीरेन्द्र'' न दिल है, लुटाने की वस्तु,
लुटाया यह जिसने, रहा हाथ मलके ।

भजन

तर्ज : छुपा लो यूं दिल में ।

उठो वतन के ऐ नौजवानो, यह वक्त तुमको बुला रहा है ।
सभी की नजरें लगी हैं तुम पर, हर एक दिल गुनगुना रहा है ।।
कहीं पे मण्डियां कवाब की हैं, कहीं पे नदियां शराब की हैं ।
गगन से ऊंचा ये देश मेरा, पतन के सागर में जा रहा है ।।
निढाल गऊएं पुकारती हैं, सभी तरफ ये निहारती हैं ।
कहीं तो होगा हमारा रक्षक, नजर न कोई भी आ रहा है ।।
कहीं मुसलमां कहीं ईसाई, बने विधर्मी हमारे भाई ।
जिसे ऋषि ने कुचल दिया था, वो सांप फिर सर उठा रहा है ।।
उठो जवानी की शान बनकर, शिवाजी राणा चौहान बनकर ।
तुम्हारे घर में छुपा है दुश्मन, जो योजनाएं बना रहा है ।।
उठो जमाना बदल के रख दो, बुरे इरादे मसल के रख दो ।
खड़ा हिमालय बहादुरी की, कथा तुम्हारी सुना रहा है ।।
उठो ऐ भारत के नौनिहालो, उठो वतन की दशा संभालो ।
''पथिक'' अंधेरे में सूर्य तुम हो, ये गीत इतिहास गा रहा है ।।

भजन

भगवान् आर्यों को पहली लगन लगा दे ।
वैदिक धर्म के खातिर मिटना इन्हें सिखा दे ।।

फिर राम कृष्ण निकलें घर-घर गली-गली से ।
अर्जुन व कर्ण जैसे योद्धा रणस्थली से ।
भीष्म से ब्रह्मचारी और भीम महाबली से ।
गौतम कणाद जैमिनि ऋषिवर पतञ्जलि से ।
फिर से कोई दयानन्द जैसा ऋषि दिखा दे ।।१।।
ऐसे हों लाल पैदा खेलें जो गोलियों से ।
भूमि को तृप्त कर दे श्रद्धा की डोलियों से ।
गूंजे ये देश मेरा शेरों की बोलियों से ।
बिस्मिल गुरु भगतसिंह वीरों की टोलियों से ।
इनको वतन की खातिर फांसी पे भी हंसा दे ।।२।।

कोई लेखराम जैसा गुरुदत्त दयाल होवे ।
कोई श्रद्धानन्द होवे कोई हंसराज होवे ।
बढ़ती बीमारियों का फिर से इलाज होवे ।
नेतृत्व जिनका पाकर उन्नत समाज होवे ।
बेधड़क लाजपत सा फिर से 'पथिक' बना दे ।।३।।

कुछ सोचो विचारो

हम कौन थे क्या हो गये,
और क्या होंगे अभी ।
आओ विचारें बैठकर,
ये समस्याएं सभी ।।१।।

स्वदेश प्रेम–

जो भरा नहीं है भावों से,
बहती जिसमें रसधार नहीं ।
वह हृदय नहीं है पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं ।।२।।

स्वदेशाभिमान–

जिसको न निज गौरव तथा,
निज देश का अभिमान है ।
वह नर नहीं पशु है निरा,
और मृतक समान है ।।३।।
मरते–मरते मर गये,
लेकिन न छोड़ा आन को ।
याद रक्खो दोस्तो,
हिन्दुस्तानी शान को ।।४।।

पथिक का प्रश्न–

आग लगी इस वृक्ष में,
जलने लगे सब पात ।
उड़ जाओ हे पक्षियो,
जब पंख तुम्हारे साथ ।।५।।

पक्षी का उत्तर–

फल खाये इस वृक्ष के,
गन्दे किये सब पात ।
धर्म हमारा यही है,
जल मरें इसी के साथ ।।६।।

सन् १८५७ का अंग्रेज–

दम–दमे में दम नहीं,
ख़ैर मांगो जान की ।
ऐ जफर ठण्डी हुई,
तलवार हिन्दुस्तान की ।।७।।

जफर का उत्तर–

गाँजियों में बू रहेगी,
जब तलक ईमान की ।
तख्ते लन्दन तक चलेगी,
तेग हिन्दुस्तान की ।।८।।

भजन

एक डाल के हम हैं पक्षी, अलग–अलग अपनी भाषाएं ।
एक दूजे को साथ में लेकर एक ही स्वर में गायें ।।
ला ला ला......

गलत मत कदम उठाओ, सोचकर चलो, विचार कर,
चलो, राह की मुसीबतों को पार कर चलो ।

हम पे जिम्मेदारियां हैं देश की बड़ी ।
हम पे जिम्मेदारियां हैं धर्म की बड़ी ।
हम पे आने वाली आशिकी नजर पड़ी ।
चिराग ले चलो । आग ले चलो ।
ये मस्तियों के रंग भरे फाग ले चलो ।। गलत... ।।१।।

मिले चलो एक साथ अब नहीं रुको ।
बढ़ते चलो एक साथ अब नहीं रुको ।

अन्याय का हो सामना न तुम कहीं झुको ।
साज करेगा । आवाज करेगा ।
हमारी वीरता पे जहां नाज करेगा ।। गलत··· ।।२।।

मंजिल के मुसाफिर तुझे क्या राह की फिकर ।
चट्टान के तूफान के झोंकों का क्या जिकर ।
ठोकर से ऊंचा चढ़ता है दुनिया में हर बशर ।
वो कौन आ रहा मंजिल पे छा रहा ।
वो कौन मंजिलों पे मंजिलें बना रहा ।। गलत··· ।।३।।

काल की करवाल से इन्सान कब डरा ?
तू प्रलय के बादलों को छोड़ तो जरा ।
लाख मौत हों मगर मनुष्य कब मरा ।
ज्योत तो जला । पंथ तो चला ।
प्रेम का पला भला वो सूर्य कब ढला ।। गलत··· ।।४।।

शहीदों की पुकार

चढ़ के फांसी के तख्ते पर होके मगन,
मेरे प्यारे वतन हम तो जा रहे हैं ।

हम तो जाते हैं ऐ देश वालो,
काम आगे का अब तुम सम्भालो ।
टालो दुखड़े सजन, दुःखी भारत के जन,
ये लखीना चमन दुष्ट खा रहे हैं ।।

मौत से ये जवानो न डरना, देश आजाद अपना ,
वरना हो जाय भारत का जीना कठिन।
दुष्ट चर्चीले जो आजमा रहे हैं ।।

तेरे खातिर हे भारत माता, तोड़ा परिवार अपना,
झूले फांसी के झूले पे तेरा ललन।
छन्द लिखते रतन तिलमिला रहे हैं ।।

कहां गई तरुणाई

रे बता दे कोई कहां गई तरुणाई ।
गई-गई बस गई लौट कर फिर न कभी वह आई ।
रे बता दे
जिसकी रक्षा के हित खाई मेवा मिठाई ।
दूध दही घृत मक्खन खाया हलवा खीर मलाई ।।
रे बता दे
पिस्ता और बादाम छुहारे ढेरों किशमिश खाई ।
लड्डू पेड़ा और इमरती बरफी बालूशाही ।
रे बता दे
रस गुल्ले रस बड़े आदि पर जिसकी रही चढ़ाई ।
उस बेवफा रांड ने मुड़कर सूरत नहीं दिखाई ।
रे बता दे
चली गई चुपचाप तोड़कर ममता मोह मिताई ।
उसे ढूंढते कमर झुक गई फिर भी योग न पाई ।
रे बता दे
ऊंचे-ऊंचे पर्वत लांघे नीची नदियां खाई ।
अब दस अंगुल नीचा ऊंचा देख बुद्धि चकराई ।
रे बता दे
कान न सुने आंख न देखे पग चले लंगड़ाई ।
तन में रोग समूह समाया, मन में भूत समाई ।
रे बता दे
रे ! नवयुवको बात हमारी सुनो कान में भाई ।
ये तरुणाई धोखा देगी तजकर स्नेह सगाई ।
रे बता दे
इसके जाने से पहले, कुछ कर लो अमर कमाई ।
जितना लाभ ले सको ले लो फिर न उठेगी पाई ।
रे बता दे
तब फिरोगे कहते कहां गई तरुणाई ।
रे बता दे

इन्साफ की डगर पे

इन्साफ की डगर पे, बच्चो दिखाओ चल के ।
यह देश है तुम्हारा, नेता तुम्हीं हो कल के ।।

दुनिया के रंज सहना और कुछ न मुंह से कहना ।
सच्चाइयों के बल पर, आगे ही बढ़ते रहना ।
रख दोगे एक दिन तुम, संसार को बदल के ।।

अपने हो या पराये, सबके लिए हो न्याय ।
देखो कदम तुम्हारा, हरगिज न डगमगाये ।
रस्ते बड़े कठिन हैं, चलना सम्भल सम्भल के ।।

इन्सानियत के सर पर, इज्जत का ताज रखना ।
तन मन की भेंट दे कर भारत की लाज रखना ।
जीवन नया मिलेगा, अन्तिम चिता में जल के ।।

इन्साफ की डगर पे, बच्चो दिखाओ चल के ।
यह देश है तुम्हारा, नेता तुम्हीं हो कल के ।।

हटो नहीं डरो नहीं, बढ़े चलो, बढ़े चलो

न हाथ एक शस्त्र हो, न साथ एक अस्त्र हो,
न अन्न नीर वस्त्र हो, हटो नहीं डरो नहीं।
बढ़े चलो, बढ़े चलो ।।

रहे समक्ष हिम शिखर, तुम्हारा प्रण उठे निखर,
भले ही जाये तन बिखर, रुको नहीं, झुको नहीं।
बढ़े चलो, बढ़े चलो ।।

घटा घिरी अटूट हो, अधर में कालकूट हो,
वही अमृत की घूंट हो, जिये चलो, मरे चलो।
बढ़े चलो, बढ़े चलो ।।

चलो नई मिसाल हो, जलो नई मशाल हो,
बढ़ो नया कमाल हो, रुको नहीं, झुको नहीं ।
बढ़े चलो, बढ़े चलो ।।

पुकारती है ये जमीं

पुकारती है ये जमीं, पुकारता है आसमां,
कदम मिला के बढ़े चलो, हिन्दोस्तां के नौजवां।
समय पुकारता तुम्हें, उठो जवान हिन्द के,
मौत से लड़ो, करो आंधियों का सामना ।।
मन्दिरों के देवता ! उठो और पुजारियो ।
गिरजे के पादरी उठो ! गुरुद्वारे के अनुयायियो,
अल्लाह के वन्दे आ मिलो, वतन के पहरेदार हो ।
पुकारती है भारती रो-रो के बार-बार यों ।।
भारत की नारियो तुम्हें, सौगन्ध अपने श्याम की,
जौहर की ज्वाला फूंक दो, सौगन्ध तुमको राम की'।
बारूद सी सुलग पड़ो, वतन की आन बान पर,
जमी गगन भी कांपता, रहे तुम्हें निहारता ।।
आज हम न हिन्दू हैं, न मुसलमान भाइयो,
सिक्ख हैं, न पारसी, आ मिलो भाइयो ।
हिमालय की गोद में, दुश्मनों को रौंद दो,
शेर ज्यों दहाड़ते, बढ़े चलो, बढ़े चलो ।।

सीमा के प्रहरी जवान

(शहीद दिवस)

(**तर्ज**-पंख होते तो उड़)

सीमा के प्रहरी जवान रे ।
तुम्हें रहना सदा सावधान रेऽऽ ।। तेरे ।।
हिन्दुस्तां की आंख के तारे ।
भारत मां के तुम हो दुलारे ।
तेरे ही बल पर अमन है प्यारे ।
आजादी के तुम हो सहारे ।
रहना सदा सावधान ।। तुम्हें ।।
बम बम कह कर बम गिराना ।
दुश्मनों के छक्के छुड़ाना ।

खेलते लड़ते ही शीश कटाना ।
भारत मां का दूध न लजाना ।
रहना सदा सावधान ।। तुम्हें ।।
सीमा पे दुश्मन है आंखें गड़ाए ।
बड़ी शक्तियां होड़ लगाए ।
हिन्द महासागर को अड्डा बनाए ।
अपने वतन पे आंच न आए ।
रहना सदा सावधान ।। तुम्हें ।।
दांतों तले जहां अंगुली दबाये ।
जब तू रण में कौशल दिखाये ।
मां भारती फूली न समाये ।
बहनें कुङ्कुम तिलक लगाये ।
रहना सदा सावधान ।। तुम्हें ।।

जागो रे भाई जागो

(**तर्ज**–चल–चल कहीं)

समूह गान

जागो रे भाई जागो रे ऽऽ जागो रे भाई जागो रे ।
धरती बांट रही है मेहनत का फल–२ जागो रे ऽऽ । (टेर)
पढ़ लिखकर बाबूजी बनना, यह तो नहीं गांधी का सपना ।
गांव को स्वर्ग बनाओ, राम राज्य फिर लाओ ।
साथी ! काम करो मत भागो रे ।। जागो..... ।
जब मेहनत ने ली अंगड़ाई, बंजर भूमि भी इठलाई ।
सोए सपने जागे, दूर गरीबी भागे ।
साथी ! भीख न कोई मांगो रे ।। जागो..... ।
दूर करो भाषा के रगड़े, हिन्दू, मुसलमानों के झगड़े ।
छुआं छूत मिटाओ, बन्धुता अपनाओ ।
साथी ! सुख दुःख मिलकर बांटो रे ।। जागो..... ।
बन्द करो हड़तालें सारी, तोड़ फोड़ की कारगुजारी ।
उत्पादन बढ़ाओ, मंहगाई घटाओ ।
साथी ! निद्रा अपनी त्यागो रे ।। जागो..... ।

नौजवान देश के बढ़े चलो

नौजवान देश के बढ़े चलो, बढ़े चलो ।
बढ़े चलो, बढ़े चलो, बढ़े चलो ।।
आज रक्त में नया प्रवाह झनझना रहा ।
युद्ध द्वार पर खड़ा चुनौतियां सुना रहा ।।
भेरियां बजें कि शंख नाद हो,
हर दिशा में एक ही निनाद हो ।
शान्ति की उतारने को आरती,
नौजवान देश के बढ़े चलो ।।
देश के विधान में, नवीन पृष्ठ जोड़ दो ।
शत्रु जो बढ़े इधर, उसी के पांव तोड़ दो ।।
युद्ध का नया जुनून चाहिए,
राष्ट्र को जवान खून चाहिए।
गूंजती यही स्वतन्त्रता भारती,
नौजवान देश के बढ़े चलो ।।
सांस सांस एक अग्नि ज्वाला हो,
हाथ हाथ शान्ति की मशाल हो ।
मां वसुन्धरा तुम्हें पुकारती,
नौजवान देश के बढ़े चलो ।।
बढ़े चलो......

हमारा देश

अलग अलग है भाषा अपनी,
अलग अलग है वेष ।
अलग अलग है मजहब फिर भी,
एक हमारा देश ।
एक दिये की बाती बाती
मद्रासी पंजाबी बिहारी चाहे हो गुजराती । एक दिये....
हम वो हस्ती जिसे देखकर दुश्मन घबरा जाए ।।
किसकी हिम्मत है जो हम से आंख मिला वो पाए ।
मौत भी हम को ले यारो वो भी घबरा जाती है ।।

रंग कितने ही चाहे हमारी एक मगर तस्वीर ।
मेहनत करके हम बदलेंगे भारत की तकदीर ।।
हिम्मत कर जो आगे बढ़े तो मंजिल खुद पास आए ।
देख रहा है हमें जमाना ललचाही आंखों से ।।
सावधान रहना तुम लोगो घर के गद्दारों से ।
घर न जलावे कहीं घर का दीपक बाती ।। एक दिये....

समूह गान

यह वक्त की आवाज है, मिल के चलो,
यह जिन्दगी का राज है, मिल के चलो ।
मिल के चलो, मिल के चलो, मिल के चलो ।।

आज दिल की रंजिशें मिटा के आओ,
आज भेदभाव सब मिटा के आओ ।
आजादी से है प्यार, जिन्हें देश से है प्रेम ।
कदम कदम पे आज , दिल से दिल मिला के आओ ।।

मिल के चलो, मिल के चलो,
मिल के चलो, यह वतन की आवाज है ।

हम जवां हैं देश के

हम जवां हैं देश के, रुके नहीं, झुके नहीं,
काम कौनसा है जो कि हम से हो सके नहीं ।

जिन्दगी है देश की, देश यह हमारा है,
स्वतन्त्रता अमर रहे यही हमारा नारा है ।
मन्त्र प्रजातन्त्र का सुनायेंगे सभी कहीं काम कौनसा,
याद हैं कुर्बानियां जो शहीद दे गये ।

कर चलो या मर चलो यह बात हम कह गए,
काम चाहते थे जो हम कर चलें वही ।
काम चाहते थे जो हम कर चलें वही ।
काम कौनसा......

गीत

एक तन पर सोने के तार खिंचे ।
एक तन पर सूत का तार नहीं ।।
इसीलिए बगावत करता हूं यह न्याय मुझे स्वीकार नहीं ।

गोपाल लाल के नाम से यहां, मक्खन मस्टण्डे खाते हैं,
द्वार पर कंगाल खड़े, पर सुनते श्याम पुकार नहीं ।
मैं इसीलिए बगावत करता हूं....
हल की सूरत देखी ही नहीं, हकदार हजारों बीघा के,
हल के संग हस्ती मिटा रहा, वो बीघे का हकदार नहीं ।
मैं इसीलिए बगावत करता हूं.....
पूरे एकड़ में बनी हवेली, रहने वाले दो प्राणी,
दस हाथ का घर दस रहते हैं, सो सकते पैर पसार नहीं ।
मैं इसीलिए बगावत करता हूं.....
इक चर्बी का भरा परेशान, एक कोरे हाड़ लिये बैठा,
इक दर्द दिल का मारा है, एक और कोई दिलदार नहीं ।
मैं इसीलिए बगावत करता हूं.....
ऊपर अम्बर नीचे धरती, इन्सान सड़क पर सोता है,
रह सकता है ऐसे इन्सां, रह सकती साहब की कार नहीं ।
मैं इसीलिए बगावत करता हूं.....

उठो नौजवानो

उठो नौजवानो वतन को जगा दो ।
जो कर्जा है तुम पे वतन का चुका दो ।।

हैं कटती हजारों ही हर रोज गऊएं,
यह धब्बा सदा के लिए तुम मिटा दो ।

जो गौ हत्या के आज बादल हैं छाये,
तुम आंधी बनो और ये बादल उड़ा दो ।

शिवा जी गोविन्दसिंह व राणा के शेरो,
कसाइयों के पंजों से गौएं छुड़ा दो ।

सहो वार सीने पे तुम गोलियों के,
मगर इस तशद्दुत की हस्ती मिटा दो ।

उठो दे के तुम लाख कुर्बानियां भी,
है बिगड़ी वतन की दशा जो बना दो ।

जो गौ रक्षा होती है कुर्बानियों से,
तो हर चीज कुर्बान कर के दिखा दो ।

जो तन है तो तन की जो मन है तो मन की,
जो धन है तो धन की ही बाजी लगा दो ।

तुम्हारी तो यह इम्तिहां की घड़ी है,
उठो बुलबुलो चहचहाना भुला दो ।

अगर इस समय पर जरूरत हो सर की,
तो कुछ भी न सोचो कि गर्दन झुका दो ।

जवानो तुम्हारी तो मां कट रही है,
रे क्या देखते हो जवानी लुटा दो ।

"पथिक" जिन्दगी चाहो गर इस जहां में ।
शहीदों में तुम नाम अपना लिखा दो ।।

वह नर नहीं नर-पशु निरा है...

युगकवि मैथिलीशरण गुप्त

जिसको न मानापमान का अपने तनिक भी ध्यान है ।
जिसको न भाता जन्म भू के गुण-गणों का गान है ।।
जिसको न अपने पूर्वजों की आन की कुछ आन है ।
जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है ।
वह नर नहीं नर पशु निरा है और मृतक समान है ।।१।।

उसका पतन अब हो चुका सम्भव नहीं उत्थान है ।
है मूर्ति मिट्टी की, नहीं उसमें रही कुछ जान है ।।
उसकी जगह जग में नहीं परलोक ही स्थान है ।
जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है ।।
वह नर० ।।२।।

जो दीन बनकर मांगता दर-दर दया का दान है ।
विश्वास अपने बाहुबल पर है न बाकी आन है ।।
कैसे कहें दुर्बुद्धि शठ वह मानवी सन्तान है ।
जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है ।
वह नर० ।।३।।
जिसको कि अपनी मातृभाषा प्रिय नहीं जिमिप्राण है ।
जो अन्य देशी भाव भाषा भेष पर कुर्बान है ।।
जिसको नहीं कर्तव्य का अपने जरा भी ज्ञान है ।
जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है ।
वह नर० ।।४।।

गीत

तर्ज-ईचक दाना

आशाओं की जोत जगा कर आगे बढ़ते जाना ।
न घबराना ।
देश धर्म के परवाने न पीछे कदम हटाना ।
न घबराना ।
रोक सके न कोई तुझ को आंधी और भूचाल,
फंसे न तेरा पांओ कोई लाख बिछाये जाल ।
वीर शिवा प्रताप वैरागी नलवा बन दिखलाना ।।
न घबराना ।
अपने पांओं के बल बूते पर रखना विश्वास,
हिम्मत हार के बैठ न जाना होना नहीं निराश।
वीर हकीकत बन कर तुझको सिर भी पड़े कटाना।।
न घबराना।
तोप तीर तलवार के आगे लेना सीना तान,
अमर आत्मा है हंस हंस के हो जाना बलिदान ।
जीवन का उद्देश्य नहीं है केवल पीना खाना ।।
न घबराना ।
मरना भला उसी का है जो धर्म देश पर मरता है।
नन्दलाल जो पड़ा खाट पर हाय हाय करता है ।।

भारत की झांकी

आओ बच्चो, तुम्हें दिखायें झांकी हिन्दुस्तान की ।
इस मिट्टी से तिलक करो, यह धरती है बलिदान की ।।

उत्तर में रखवाली करता पर्वतराज विराट् है ।
दक्षिण में चरणों को धोता, सागर का सम्राट् है ।
जमुना जी के तट को देखो, गंगा का यह घाट है ।
बाट-बाट में, हाट-हाट पर यहां निराला ठाट है ।
देखो ये तस्वीरें अपनी गौरव की अभिमान की ।।

ये है अपना राजपूताना, नाज उसे तलवारों पे ।
उसने सारा जीवन काटा, बरछे तीर कटारों पे ।
ये प्रताप का व्रत पाला है आजादी के नारों पे ।
कूद पड़ी थीं यहां हजारों पद्मिनियां अंगारों पे ।
बोल रही है कण-कण से कुर्बानी राजस्थान की ।।

देखो मुल्क मराठों का ये, यहां शिवा जी डोला था ।
मुगलों की ताकत को जिसने, तलवारों से तोला था ।
हर पर्वत पर आग लगी थी, हर पत्थर एक शोला था ।
बोली हर-हर महादेव की, बच्चा-बच्चा बोला था ।
यहां शिवा जी ने रखी थी, लाज हमारी शान की ।।

जलियां वाला बाग ये देखो, यहीं चली थीं गोलियां ।
ये मत पूछो किसने खेली, यहां खून की होलियां ।
एक तरफ बन्दूकें दन-दन, एक तरफ थी टोलियां ।
मरने वाले बोल रहे थे, 'इन्कलाब' की बोलियां ।
यहां लगा दी बहनों ने भी, बाजी अपनी जान की ।।

ये देखो बंगाल यहां का हर चप्पा हरियाला है ।
यहां का बच्चा-बच्चा अपने देश पे मरने वाला है ।
ढाला है इसको बिजली ने, भूचालों ने पाला है ।
मुट्ठी में तूफान बंधा है और प्राणों में ज्वाला है ।
जन्मभूमि है यही हमारे वीर सुभाष महान् की ।।

चन्दन है इस देश की माटी

चन्दन है इस देश की माटी तपोभूमि हर ग्राम है ।
हर बाला देवी की प्रतिमा बच्चा-बच्चा राम है ।।

जिसके सैनिक समर भूमि में गाया करते गीता हैं,
जहां खेत में हल के नीचे खेला करती सीता है।
जीवन का आदर्श जहां पर परमेश्वर का धाम है ।।
हर बाला देवी की प्रतिमा……

जहां कर्म से भाग्य बदलता, श्रम निष्ठा कल्याणी है,
त्याग और तप की गाथा में गाती कवि की वाणी है ।
ज्ञान जहां का गंगाजल सा निर्मल और अविराम है।।
हर बाला देवी की प्रतिमा……

हर शरीर मन्दिर-सा पावन हर मानव उपकारी है,
जहां शेर बन गये खिलौने गाय जहां मां प्यारी है ।
जहां सवेरा शंख बजाता लोरी गाती शाम है ।।
हर बाला देवी की प्रतिमा……

कविता

सुबह हुई, रात गई दूर, हुआ अंधियारा ।
जागो रे, देखो रे चमका सुबह का तारा ।।

हम चढ़े चलें, हम नहीं रुकें, हम नवयुग की सन्तान हैं ।
हम कदम धरें, पीछे न मुड़ें, मंजिल हमारी महान् है ।।

समय किसी का साथी नहीं, पर हम समय के साथी हैं ।
हम बूढ़े हों या बच्चे हों, हम सब परस्पर साथी हैं ।।
जब समय गया, हर साथ गया, तब सारा सफर सुनसान है ।
हम पल दो पल के साथी हैं, हम दो पल के मेहमान हैं ।।१।।

पत्थर भी और कांटे भी, जीवन की सफर की राहों में ।
आंसू भी छलकते आंखों से, और दर्द सिसकता आहों में ।।
जब सांस रुके और दर्द मिटे, तब ही जीना आसान है ।
ये मौत हकीकत मौत नहीं, नवजीवन का पैगाम है ।।२।।

इस घर में दिया जलाने को, सौ घर में आग लगाये क्यों ।
केवल इक बंगले की खातिर, सारी बस्ती को जलाये क्यों।।
जब भेद खुले हर दर्द मिटे, तब सारा सुखी संसार है ।
ये जमीं मुसाफिरखाना है और हम इसके मेहमान हैं ।।३।।

देश हमारा धरती अपनी

देश हमारा धरती अपनी, हम धरती के लाल ।
नया संसार बनायेंगे नया इन्सान बनायेंगे ।।

सौ सौ स्वर्ग उतर आयेंगे सूरज सोना बरसायेंगे ।
दूध पूत के लिए पहिन कर जीवन की जयमाला ।।
रोज त्यौहार मनायेंगे । नया संसार......

सुख सपनों के स्वर गूंजेंगे, मानव की मेहनत पूजेंगे ।
नई चेतना, नये विचारों की हम लिये मसाल ।।
मनुज को राह दिखायेंगे । नया संसार......

एक करेंगे जग जनता को, सोचेंगे जग की ममता को ।
नई सभ्यता समता रचकर करके उन्नत ।।
मनुज को मुक्ति दिलायेंगे । नया संसार......

देश की माटी

देश की माटी नमन है तुम को ।
देश की धरती नमन है तुम को ।।

राम कृष्ण ने इस रज से ही चुपके-चुपके माटी खाई ।
मिटा दिया माता के भ्रम को ईश्वर और जीवन की खाई ।।
देश की......

इस माटी में ही अर्जुन को गीता का शुभ ज्ञान मिला ।
पावन धरा में गूंजी वाणी वास्तविकता का ज्ञान मिला ।।
इस माटी में ही बापू ने शान्ति का सन्देश दिया ।
मिटा दिया यहां छुआछूत को मानवता का ज्ञान दिया ।।
देश की......

मत बांटो इन्सान को

मन्दिर–मस्जिद–गिरिजाघर में, बांट दिया भगवान् को ।
धरती बांटी, सागर बांटा, मत बांटो इन्सान को ।।

ना कोई हिन्दु ना कोई मुस्लिम, ना कोई सिक्ख ईसाई ।
भेदभाव आपस के बदलो, याद करो भगवान् को ।।
मन्दिर......

ना कोई काला ना कोई गोरा, ना कोई छूत–अछूत है।
आगे बढ़कर गले लगाओ, हर गिरते इन्सान को ।।
मन्दिर......

बुरी नजर जो उठे किसी की, उन आंखों को फोड़ दो ।
न्यौछावर कर प्राण गंवा दो, भारत मां की शान को ।।
मन्दिर......

श्रमजल से सींचो धरती को, जो प्राणों से भी प्यारी है ।
अधिक अन्न उपजा कर भर दो, भारत के भंडार को ।।
मन्दिर......

राष्ट्र वन्दना

सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा ।
हम बुलबुलें हैं इसकी, यह गुलिस्तां हमारा ।।

गुरबत में हों अगर हम, रहता दिल वतन में ।
समझो यही हमें कि दिल हो जहां हमारा ।।

पर्वत वो सबसे ऊंचा, हमसाया आसमां का ।
वो सन्तरी हमारा वो पासवां हमारा ।।

गोदी में खेलती हैं, जिसकी हजारों नदियां ।
गुलशन हैं जिसके दम से, रश्के जिनां हमारा ।।

विराम कर दिया था आंधी ने जिस चमन को,
दे कर लहू बचाया सुभाष ने इस चमन को ।
रक्षा करेगा इसकी हर नौजवाँ हमारा ।।

मजहब नहीं सिखाता आपस में वैर रखना ।
हिन्दी हैं हम, वतन हैं हिन्दोस्तां हमारा ।।

यूनान, मिश्र, रोमाँ सब मिट गये जहां से ।
अब तक मगर है बाकी, नामो निशां हमारा ।।

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी ।
सदियों रहा है दुश्मन दौरे जहां हमारा ।।

जीने की बात कर

हम से न तू खाने की न पीने की बात कर ।
मर्दों की तरह दुनिया में जीने की बात कर ।।

जिस मातृभूमि की अरे तू गोद में पला,
जिसकी पवित्र धूल में घुटनों के बल चला।
उसके फटे आंचल को तू सीने की बात कर ।।१।।

खुद दर्द की दवा हो औरों से न दवा ले,
सोफे पै मत पड़े पड़े पंखे की हवा ले।
मेहनत से बहने वाले पसीने की बात कर ।।२।।

क्यों देवता पैगम्बरों का पूछता पता,
इस प्यारी मातृभूमि का कण कण है देवता।
मत यूरोशलम मक्के मदीने की बात कर ।।३।।

निज ज्योति से अंधेरा जो हर दिल का मिटा दे,
माता के मुकुट में जो चार चांद लगा दे।
नक़ली नहीं तू असली नगीने की बात कर ।।४।।

बलिवेदी पै सर अपना जो हँस कर चढ़ा गये,
कर्त्तव्य का जो पाठ सभी को पढ़ा गये।
उन वीर शहीदों के करीने की बात कर ।।५।।

वह सीना क्या जो आये काम स्यापा के लिए,
हाँ राष्ट्र भवन की 'प्रकाश' रक्षा के लिए।
दीवार बने जो उसी सीने की बात कर ।।६।।

हम हिन्दुस्तानी

हिन्दुस्तानी हम हमारा देश हिन्दुस्तान ।
देश की खातिर हंसते हंसते हो जाएं कुर्बान ।।
जान से प्यारा हिन्द हमारा दुनिया से है न्यारा ।
सौंप दिया है हमने इसकी खातिर जीवन सारा ।।
यही हमारी आन हमारी बान हमारी शान ।।
हिन्दुस्तानी हम हमारा······
देश की खातिर मरने वाले हम इसके रखवाले ।
अमृत कर के पी जाएं हम भारत मां के छाले ।।
प्राण करें न्यौछावर इस पे भारत की सन्तान ।।
हिन्दुस्तानी हम हमारा······
कदम कदम पर बढ़ते जाएं गाएं यही तराना ।
हर शत्रु से टक्कर लें यह जाने कुल जमाना ।।
दुनिया में हम से टकराना काम नहीं आसान ।।
हिन्दुस्तानी हम हमारा......
पत्थर को पिघला के रख दें हम हैं ऐसे शोले ।
फौलादी हैं सीने अपने हम अग्नि के गोले ।।
झांक रहे हैं 'पथिक' हमारी मुट्ठी में तूफान ।।
हिन्दुस्तानी हम हमारा······

ऊंचा स्थान

ऋतुओं में वसन्त का, वीरों में हनुमन्त का ।
दयानन्द सन्त का, ऊंचा स्थान है।।१।।
संगीत में साज का, जीवन में सुकाज का ।
आर्यसमाज का, ऊंचा स्थान है।।२।।
गर्मी में पवन का, सत्संग भवन का ।
सन्ध्या और हवन का, ऊंचा स्थान है।।३।।
पशुओं में गाय का, वेदों के स्वाध्याय का ।
वृद्धों की राय का, ऊंचा स्थान है।।४।।
सप्ताह में सण्डे का, मास्टर के डण्डे का ।
ओ३म् के झण्डे का, ऊंचा स्थान है।।५।।

नदियों में गंग का, साजों में मृदंग का ।
भगवे रंग का, ऊंचा स्थान है।।६।।
बदन में शीश का, गिनती में इक्कीस का ।
प्रभु जगदीश का, ऊंचा स्थान है।।७।।
सावन में खीर का, युद्ध में वीर का ।
गाय के क्षीर का, ऊंचा स्थान है।।८।।

हिन्द देश के निवासी

हिन्द देश के निवासी, सभी जन एक हैं ।
रंग रूप वेश भाषा चाहे अनेक हैं ।।
बेला गुलाब जूही चम्पा चमेली ।
प्यारे-प्यारे फूल गुंथे माला में एक हैं ।।
कोयल की कूक न्यारी, पपीहे की टेर प्यारी ।
गा रही तराना बुलबुल राग मगर एक है ।।
गंगा यमुना ब्रह्मपुत्र कृष्णा कावेरी ।
आके मिल गईं सागर में हुईं सब एक हैं ।।

समूह गान

मेरा देश महान् है, भारत देश महान् है ।
अनुपम रत्नों की खान है, भारत देश महान् है ।।
आकाश छू न सके मेरे देश की ऐसी शान है ।
जब मांग हुई कुर्बानी की, मेरे देश ने इतना दान दिया ।
मेरे देश के बच्चे-बच्चे ने खुद काट के सिर कुर्बान किया ।।
हंस कर पहुंचा बलिवेदी पर, गोली झेली है सीने पर ।
जो अस्त कभी न हो पाई, मेरे देश की यह मुस्कान है ।।
मेरा देश महान् है, भारत देश महान् है ।।
मेरा देश है ऐसा एकाकी जो अपना भाग्य बताता है ।
जो अपने खून पसीने से, बंजर में बाग लगाता है ।।
जिसने साहस को अपनाया, संकट में जो न घबराया,
जो टूट गया पर झुका नहीं, मेरे देश का स्वाभिमान है ।
मेरा देश महान् है, भारत देश महान् है ।।

गीत

यह है देश वीर जवानों का, अलबेलों का मस्तानों का,
इस देश का यारो ! इस देश का यारो क्या कहना ।
यह देश है दुनिया का गहना ।।

यहां चौड़ी छाती वीरों की, यहां भोली शक्लें हीरों की,
यहां गाते हैं रांझे, यहां गाते हैं रांझे मस्ती में ।
मचती हैं धूमें बस्ती में ।।

पेड़ों पे बहारें झूलों की राहों में कतारें फूलों की,
यहां हंसता है सावन, यहां हंसता है सावन बालों में ।
खिलती हैं कलियां हाथों में ।।

कहीं दंगल शोख जवानों के, कहीं करतब तीर कमानों के,
यहां नित नित मेले, यहां नित नित मेले सजते हैं ।
नित ढोल और ताशे बजते हैं ।।

दिलबर के लिए दिलदार हैं हम, दुश्मन के लिए तलवार हैं हम,
मैदां में अगर हम, मैदां में अगर हम डट जाएं ।
मुश्किल है कि पीछे हट जाएं ।।

बाल-प्रतिज्ञा

(**तर्ज**–आओ बच्चो तुम्हें दिखायें)

आओ आज प्रतिज्ञा कर लें अपने धर्म-ईमान की ।
एक बनेंगे नेक बनेंगे कलियाँ हिन्दुस्तान की ।
अच्छे बालक हम-अच्छे बालक हम ।। टेर ।।

प्रातः काल हम जल्दी उठकर नित शाला में जायेंगे ।
खेल कूद और विद्या से हम कभी ना मन चुरायेंगे ।
माता-पिता और गुरु के आगे अपना शीश झुकायेंगे ।
एकलव्य बन जायेंगे हम देंगे परीक्षा बाण की ।।
एक......

पढ़ लिख कर हम कर्म करेंगे शर्म कभी ना लायेंगे ।
कांधे हलधर हाथ कुदाली खेतों में जुट जायेंगे ।
मेहनत से न मुंह मोड़ेंगे, उत्पादन बढ़ायेंगे ।
अपने हाथों काया बदलें खेतों और खलिहान की ।।
एक......

जात-पांत और छुआ-छूत की हम होली जलायेंगे ।
प्रेम भाव और बलिदान के हम दीपक जलायेंगे ।
रोटी, कपड़ा मिले सभी को ऐसा जहां बसायेंगे ।
'सुन्दर' कर दे अपने वतन को कसम है हमको आन की ।।
एक......

शहीद का सन्देश

तर्ज—चौदहवीं का चांद हो या आफताब हो ।

आखरी सन्देश है हर नौजवान को ।
रखना लहू से सींच के तुम गुलिस्तान को ।।

प्यारे वतन के वास्ते प्यारी जवानियां ।
लाती हैं रंग शहीदों की लम्बी कहानियां ।
मिटने न देना देश की तुम आन बान को ।।
आखरी सन्देश है हर......

झुकते हैं खुद पहाड़ भी हिम्मत के सामने ।
सागर भी दिल को बैठ के लगता है थामने ।
कह दो भुजा उठाके जरा इस जहान को ।।
आखरी सन्देश है हर......

राहों में चाहे लाख हों कांटों की महफिलें ।
कब्जे में दुश्मनों के भी चाहे हों मंजिलें ।
बढ़ जाना 'पथिक' चीर के तुम हर तूफान को ।।
आखरी सन्देश है हर......

गीत

ये हिन्दुस्तानी हिन्दी न जाने ।
हाये राम ! अंग्रेजी के दीवाने ।।

ये सी यू टी 'कट' है तो पी यू टी 'पुट' है,
इन गोरों की भाषा के नियम उलट हैं ।
कौन इनकी भाषा को जाने ।। हाये राम...
ये मामा व फूफा को अंकल बतायें,
ये जिन्दा पिता को तो डैड बतायें ।
कौन आये इनको समझाने ।। हाये राम...
ये अपनी ही माता की बिन्दी उतारें,
हिन्दी तो विधवा कर दी बिचारी ।
लगे इसकी अर्थी उठाने ।। हाये राम...

ध्वज गान

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झण्डा ऊंचा रहे हमारा ।
सदा शक्ति बरसाने वाला, प्रेम-सुधा बरसाने वाला ।।
वीरों को हरसाने वाला, मातृभूमि का तन मन सारा ।।
झण्डा ऊंचा...
आओ प्यारे वीरो आओ, देश धर्म पर बलि-बलि जाओ ।
एक साथ सब मिलकर गाओ, प्यारा भारत देश हमारा ।।
झण्डा ऊंचा...
शान न इसकी जाने पाये, चाहे जान भले ही जाये ।
विश्व विजय करके दिखलायें, तब होवे प्रण पूर्ण हमारा ।।
झण्डा ऊंचा...
इस झण्डे के नीचे निर्भय, लें स्वराज हम अविचल निश्चय ।
बोलो भारत माता की जय, स्वतन्त्रता ही ध्येय हमारा ।।
झण्डा ऊंचा...
स्वतन्त्रता का भीषण रण में, लख कर जोश बढ़े क्षण-क्षण में ।
कपि शत्रु देखकर मन में, मिट जाये भव संकट सारा ।।
झण्डा ऊंचा...

पावन वैदिक धर्म हमारा

हमको प्राणों से भी प्यारा ।
पावन वैदिक धर्म हमारा ।।

मोह महातम हरने वाला,
ज्ञान उजाला करने वाला ।
भव्य भावना भरने वाला ।।
दिव्य ज्योति का स्त्रोत सितारा ।
पावन वैदिक धर्म हमारा ।।१।।

वैदिक पाठ पढ़ाने वाला,
गत गौरव गुण गाने वाला ।
फिर से सतयुग लाने वाला ।।
दयानन्द ऋषि का चखतारा ।
पावन वैदिक धर्म हमारा ।।२।।

शुभ सन्मार्ग सुझाया इसने,
बुद्धिवाद उमगाया इसने ।
गुरुडम का गढ़ ढाया इसने ।।
जन में निर्भय भाव प्रचारा ।
पावन वैदिक धर्म हमारा ।।३।।

सोता देश जगाया जिसने,
प्रेम-प्रवाह बहाया जिसने ।
स्वावलम्ब सिखलाया जिसने ।।
जिसने नित्य धर्म विस्तारा ।
पावन वैदिक धर्म हमारा ।।४।।

जगत् को आर्य बनाओ

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् नहीं भुलाना है ।
आर्य सब संसार तुम्हें बनाना है ।।

सबसे पहले सब भांति अपने को आप बनाना ।
किसी संकट के झंझट से तुम पीछे मत हट जाना ।
कदम बढ़ाना है...... ।।१।।

मन वचन कर्म के अन्दर–अन्तर न होने पाये ।
कर्तव्य पूरा करने में चाहे जान भले ही जाये ।
ना घबराना है...... ।।२।।
ऋषि दयानन्द का जीवन है राह बताने वाला ।
खाई ईंटें पत्थर गाली पीया अन्त जहर का प्याला ।
प्राण गंवाना है...... ।।३।।
श्रद्धा से श्रद्धानन्द ने सीने पे खाई गोली ।
मरे लेखराम छुरी खाके लाजपत ने सही लठोली ।
अमर पद पाना है...... ।।४।।
'ताराचन्द' ओम् का झंडा फहरा दो गांव नगर में ।
एक वैदिक नाद बजाना तुम सारी दुनिया भर में ।
धूम मचाना है...... ।।५।।

गीत

लाखों जगाने वाले आये फिर भी ना जग पाये ।
तुम्हें क्या हो गया–२ ऽ ऽ ऽ हो......
जिसने तुमको गले लगाये तुमने वही मिटाये ।
तुम्हें......

ओ प्यारे भारतीयो खाकर क्यों सो गये गोली भंग की ।
अपना–पराया भूले सुध–बुध बिसारी सारे अंग की ।
बारूद ऊपर लेट लगावे फिर भी ना घबराये ।
तुम्हें...... ।।१।।
ओ प्यारे साथियो आज तुम पड़े हो उसी स्थान परऽऽऽ
जहां से है बचना मुश्किल अब भी न रेंगी जूं कान पर ।
फिर ना कोई शक्ति बचाये चाहे लाख बुलाये ।
तुम्हें...... ।।२।।
ओ प्यारे भाइयो दुश्मन तुम्हारा संसार है ।
नांव भंवर में मांझी टूटी नशे में पतवार है ।
'प्रेमी' किनारे कौन लगाये नैय्या चक्कर खाये ।
तुम्हें...... ।।३।।

आर्य ध्वज गीत

जयति ओम् ध्वज व्योम-विहारी ।
विश्व प्रेम प्रतिमा अति प्यारी ।।

सत्य सुधा बरसाने वाला,
स्नेह लता सरसाने वाला ।
सौम्य सुमन विकसाने वाला,
विश्व विमोहक भव भयहारी ।। जयति० ।।१।।
इसके नीचे बढ़े अभय मन,
सत्पथ पर सब धर्मधुरी जन ।
वैदिक रवि का हो शुभ उदयन,
आलोकित होवें दिशि सारी ।। जयति० ।।२।।
इससे सारे क्लेश शमन हों,
दुर्मति दानव द्वेष दमन हों ।
अति उज्ज्वल अति पावन मन हों,
प्रेम तरंग बहे सुखकारी ।। जयति० ।।३।।
इसी ध्वजा के नीचे आकर,
ऊंच-नीच का भेद भुला कर ।
मिले विश्व मुद मंगल गाकर,
पन्थाई पाखण्ड विसारी ।। जयति० ।।४।।
इस ध्वज को हम लेकर कर में,
भर दें वेद ज्ञान घर घर में ।
सुभग शान्ति फैले जग भर में,
मिटे अविद्या की अंधियारी ।। जयति० ।।५।।
विश्व प्रेम का पाठ पढ़ायें,
सत्य अहिंसा को अपनायें ।
जग में जीवन ज्योति जगायें,
त्याग-पूर्ण हो वृत्ति हमारी ।। जयति० ।।६।।
आर्य जाति का सुयश अक्षय हो,
आर्य ध्वजा की अविचल जय हो।
आर्य जनों का ध्रुव निश्चय हो,
आर्य बनावें वसुधा सारी ।। जयति० ।।७।।

ध्वज गान

ध्वजेयं मुदा वर्द्धते व्योमवातैः,
समुड्डीयमानान्तरिक्षे विशाले ।

महामण्डले मण्डिते रक्तवर्णे,
सुभाषैरविर्भासते ओ३म् पताका ।।

प्रबुद्धाऽऽर्यावर्तैकदेशे प्रशस्ता,
समस्त–आर्यवीरैर्धृता या समन्तात् ।

पुरा ज्ञानज्योतिः प्रदत्तं पृथिव्यां,
सुधा वेदवाण्या नुता गीयते च ।

समुद्धर्तुकामा वयं आर्यवीरा,
समुत्थाप्यतां विश्वमेतत्प्रसुप्तम् ।

इयमार्यराष्ट्राङ्गभूता ध्वजाऽऽसीत्,
पराशक्तिरूपा ददातु स्वशक्तिम् ।

महामङ्गले विश्वशान्त्येकमूर्ते,
सुकीर्तिः सदा वर्धताम् ते प्रशस्ता ।

समुद्घोषणा घोष्यते वीरघोषैः,
विजयिनी पताका विजयतां विजयताम् ।।

गीत

वैदिक नाद बजाओ, ऐ आर्य वीर–गण आओ ।

समय नहीं सोने का प्यारो, करवट लो और आंख उघारो ।
सावधान हो जाओ, ऐ आर्य वीर–गण आओ ।। वैदिक।।

ललना–लाल लुटेरे लूटें, शिखा–सूत्र मठ–मन्दिर टूटें ।
गौरव मान बचाओ, ऐ आर्य वीर–गण आओ ।। वैदिक।।

भूत भयंकर छूत–छात का, झूठा झगड़ा जात–पांत का ।
उर से मार भगाओ, ऐ आर्य वीर–गण आओ ।। वैदिक।।

हुए करोड़ों अपने भाई, गोभक्षक मुस्लिम ईसाई ।
फिर से आर्य बनाओ, ऐ आर्य वीर-गण आओ ।। वैदिक।।

गुरु गोविन्द और वैरागी सम, श्रद्धानन्द आत्मत्यागी सम ।
धर्मवीर पद पाओ, ऐ आर्य वीर-गण आओ ।। वैदिक।।

'प्रकाश' निज कर्तव्य कर्म पर, सत्य सनातन वेद धर्म पर ।
निर्भय शीश कटाओ, ऐ आर्य वीर-गण आओ ।। वैदिक।।

गीत

ऐ आर्य वीरो ! कब होश में आओगे ?
और होश में आये तो कब जोश में आओगे ?

अपनों को भी आप अब तक आर्य न बना सके ।
तो फिर गैरों को आर्य क्या खाक बनाओगे ?
घनश्याम के सुकुमारो ! श्री राम के शाहजादो ।।
क्या शान पूर्वजों की तुम मिट्टी में मिलाओगे ?
मानी न अगर तुमने यह बात 'मुसाफिर' की ।
पछताओगे, रोओगे और आंसू बहाओगे ।।

गीत

उठो दयानन्द के सिपाहियो समय पुकार रहा है ।
देशद्रोह का विषधर फन फैला फुंकार रहा है ।।टेक ।

उठो विश्व की सूनी आंखें काजल मांग रही हैं ।
उठो अनेकों द्रुपद सुताएँ आंचल मांग रही हैं ।
मरघट को पनघट सा कर दो जग की प्यास बुझादो ।
भटक रहे जो मरुस्थलों में उनको राह दिखा दो ।
गले लगालो उनको जिनको जग दुत्कार रहा है ।।१।।

तुम चाहो तो खारे जल को सोम बना सकते हो ।
तुम चाहो तो बंजर में भी बाग लगा सकते हो ।
तुम चाहो तो पानी में भी आग लगा सकते हो ।
तुम चाहो तो पत्थर को भी मोम बना सकते हो ।
जातिवाद जग की नस-नस में जहर उतार रहा है ।।२।।

याद नहीं क्या भूल गये जो ऋषि को वचन दिया था ।
शायद वादा याद नहीं जो आपने कभी किया था ।
वचन दिया था ओम्पताका कभी न झुकने देंगे ।
हवनकुण्ड की अग्नि घरों से कभी न बुझने देंगे ।
लहू शहीदों का गद्दारों को धिक्कार रहा है ।।३।।

कैसे आग बुझा पाओगे आग बहुत फैली है ।
उजली-उजली दिखने वाली हर चादर मैली है ।
लेखराम का लहू पुकारे आंख जरा तो खोलो ।
एक बार मिलकर सारे ऋषि दयानन्द की जय बोलो ।
वेद ज्ञान का "व्यथित" सूर्य तुम्हें निहार रहा है ।।४।।

उठो जवान देश के

खींच लो कृपाण, सुप्त म्यान में है जो पड़ी,
आज आ गई है तेरे इम्तहान की घड़ी।
झनझना उठे जो आज वीरता की हथकड़ी।।

देश के तुम्हीं रत्न,
ले के जीत की लगन।
उठो तूफान देश के,
उठो जवान देश के।।
उठो गुमान देश के।।

गरज रहे हैं मेघ आज फिर से आसमान पर ,
बरस रहे हैं अग्नि खण्ड, धर्म के जहान पर ।
आज गोलियों दुनलियों की मार हो रही,
देख हिन्द-शूर वीर तेरे ही निशान पर।।

उठो ले क्रोध की तपन,
उठो नवल विधन बन।
आसमान देश के,
उठो जवान देश के।।
उठो जवान गुमान देश के।।

आ न पाएं आंच ए जवान ! तेरी शान पर,
बिजलियां न गिर पड़ें, वीरता की आन पर।
आज भार तेरे बाजुओं पर देश का पड़ा,
इसीलिए जवान उठ उठ के प्राण दान कर।।

उठो स्वदेश के पथिक,
उठो श्रमिक उठो धनिक।
उठो किसान देश के,
उठो गुमान देश के ।।

दुष्ट जनों से डरना क्या

—श्री नन्दलाल

वीरो, दुष्ट जनों से डरना क्या ?
स्वाभिमान से हमने सीखा, जीना क्या और मरना क्या । दुष्ट......

अन्यायी के सम्मुख अड़ना,
देश के गद्दारों से लड़ना।
आततायी गुण्डों के आगे, जाकर नाक रगड़ना क्या ।। दुष्ट......

देश धर्म के हैं दीवाने,
जल जाते हैं ज्यों परवाने।
कायर बुजदिल भीरु बन कर, जी करके भी करना क्या। दुष्ट.....

तिरछी आंख उठायेगा जो,
मुंह की इकदम खायेगा वो।
बात-बात पर पंचशील के चक्कर में है पड़ना क्या । दुष्ट......

देश के टुकड़े करना चाहे,
उन्नति में रोड़े अटकाये ।
बिन शक्ति के उन लोगों के सिर से भूत उतरना क्या । दुष्ट......

मौत से वीर नहीं घबराते,
हंस हंस कर फांसी चढ़ जाते ।

गीत

उठो सोने वालो जगाने को आये,
समाचार सुन्दर सुनाने को आये ।
बनो सारे ज्ञानी पढ़ो वेद वाणी,
तुम्हें वेद वाणी सुनाने को आये ।।

ये मानव जन्म विश्व भर में है उत्तम ।
इसी को सफल बनाने को आये ।।......
सभी का भला हो सभी का भला हो ।
यही भावना दिल में बिठाने को आये ।।......
सदा आप सत्संग में आये जाये ।
विमल भावनाएँ जगाने को आये ।।......
रचाया है उत्सव सभी आर्यों ने ।
अवश्य ही पधारें बुलाने को आये ।।......
महोत्सव की शोभा तुम्हीं से बनेगी ।
यह सन्देश घर-घर सुनाने को आये ।।......

गीत

संगठन हम करें आपदों से लड़ें हमने ठाना,
हम बदल देंगे सारा जमाना ।

वीर प्रताप के शेर जागो, और वन्दा की शमशेर जागो,
बज रहा है बिगुल नौजवां तू निकल रण में जाना।
हम बदल देंगे सारा जमाना ।।
शेर शिवराज की तेग खड़के ध्वनि हर हर महादेव भड़के,
शक्ति हो साथ में, ओ३म् ध्वज हाथ में, बढ़ते जाना।
हम बदल देंगे सारा जमाना ।।
चाहे आंधी या तूफान आये, वर्षा ओले या बादल हैं छाये,
हम रुकेंगे नहीं, हम झुकेंगे नहीं, बढ़ते जाना।
हम बदल देंगे सारा जमाना ।।
आर्य वीरों ने है राग गाया, वैदिक राष्ट्र का डंका बजाया,
हम जियें या मरें, छल बलों से लड़ें, बढ़ते जाना।
हम बदल देंगे सारा जमाना ।।

❑ ❑ ❑

आचार्य ब्र० नन्दकिशोर

ब्रह्मचारी नन्दकिशोर विद्यावाचस्पति, एम०ए०, एक मनस्वी विद्वान् हैं । आप आर्यसमाज के हनुमान हैं । सारे भारत में भ्रमण की दृष्टि से आप नारदजी हैं । आज दिल्ली में हैं, तो कल हरिद्वार में, परसों नागपुर में फिर बम्बई में । आप स्वाध्यायशील तथा चिन्तक एवं विचारक भी हैं । आप अहर्निश आर्यसमाज की उन्नति के लिए सोचते रहते हैं । नेपाल में आपने गुरुकुल की स्थापना कर दी । भारत में भी कितने ही स्थानों पर संस्थाओं के सञ्चालन में आप अपना योगदान दे रहे हैं । पं० सत्यकेतु जी विद्यालंकार द्वारा लिखित 'आर्यसमाज के इतिहास' में भी आपने सारे भारत में घूम-घूमकर जो सामग्री डॉ० सत्यकेतु जी को उपलब्ध कराई है, वह आपका ही कार्य है । नेपाली और मराठी साहित्य के प्रकाशन में भी आपने खूब सहयोग किया है । लाला आदित्यप्रकाश आर्य, पानीपत निवासी द्वारा स्थापित 'अनीता आर्ष प्रकाशन' भी आप की ही प्रेरणा का फल है ।

श्री घूडमल प्रहलादकुमार आर्य धर्मार्थ ट्रस्ट हिण्डौन सिटी राजस्थान द्वारा प्रकाशित 'गौरव ग्रन्थमाला' के आप सुप्रसिद्ध लेखक हैं । आर्ष ग्रन्थों में से आपने आर्यसमाज के दस नियमों पर दस पुस्तक लिखी हैं । सार्वदेशिक आर्यवीर दल दिल्ली के प्रचार मन्त्री एवं आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश विदर्भ के अन्तरङ्ग सदस्य हैं । इसके अतिरिक्त आप कई संस्थानों के न्यासी हैं । वैदिक धर्म प्रचारार्थ आपने मॉरिशस, यू०के०, लन्दन, ओमान, जॉर्डन, नेपाल, भूटान, अमेरिका, हालैण्ड, बेल्जियम, फ्रांस-पेरिस, जर्मन आदि देशों की यात्राएँ की हैं । वैदिक विद्वानों का साहित्य एक हजार भाग (खण्डों) में मुद्रित हो, आर्यसमाज का साहित्य देश-विदेश के विश्वविद्यालयों में शोधनार्थियों के लिये उपलब्ध हो, इसके प्रयास में कई वर्षों से आप सतत संलग्न हैं ।

आवरण : वैदिक प्रेस, दिल्ली, 22081646